

अखिल भारतीय दर्शन-परिषद्

दार्शनिक-त्रैमासिक के आलेखों की सूची-I

| क्र. | नाम | लेख का शीर्षक | वर्ष | अंक | पृ.सं. |
|------|-------------------------|---|------|-----|--------|
| 1. | श्री यशदेव शल्य | सम्पादकीय | 1954 | 1 | 1 |
| 2. | डॉ. संगमलाल पाण्डेय | प्रातिभ ज्ञान का स्वरूप | 1954 | 1 | 8 |
| 3. | डॉ. पी.टी. राजू | भौतिक सत्ता के प्रति वेदान्तिक दृष्टिकोण | 1954 | 1 | 12 |
| 4. | श्री प्रभाकर माचवे | नकार की समस्या | 1954 | 1 | 26 |
| 5. | श्री यशदेव शल्य | कारणवाद और स्वतंत्रेच्छा का प्रश्न | 1954 | 1 | 31 |
| 6. | डॉ. आर.एन. कौल | फ्रायड - अचेतन मन का प्रत्यय | 1954 | 1 | 52 |
| 7. | प्रो. राजेन्द्र प्रसाद | वर्तमान संकट और दर्शन | 1954 | 1 | 56 |
| 8. | श्री संगमलाल पाण्डेय | सम्पादकीय- दर्शन की सर्वमान्यता | 1955 | 1 | 1 |
| 9. | डॉ. पी.एस. शास्त्री | वाक्य-स्वरूप | 1955 | 1 | 8 |
| 10. | श्री यशदेव शल्य | कारणवाद और स्वतंत्रेच्छा का प्रश्न | 1955 | 1 | 12 |
| 11. | डॉ. न.व. जोशी | परम-तत्त्व ईश्वर और सुन्दर से उसका सम्बन्ध | 1955 | 1 | 23 |
| 12. | श्री श्रीराम चिंगले | दर्शन या जीवन-दर्शन | 1955 | 1 | 29 |
| 13. | श्री नी.र. बरहाड़ पांडे | सुख-दुःख विवेक अर्थात् सुख-दुःख का मनोविज्ञान | 1955 | 1 | 40 |
| 14. | श्री रामशंकर भट्टाचार्य | भारतीय दर्शन में प्रयोग की महत्ता | 1955 | 1 | 56 |
| 15. | श्री संगमलाल पांडे | सन्त रविदास की षड्धा सत्ता | 1955 | 1 | 65 |
| 16. | डॉ. पी.एस. शास्त्री | अद्वैत तर्कशास्त्र में व्याघात का सिद्धान्त तथा बाध से उसका सम्बन्ध | 1955 | 2 | 1 |
| 17. | श्री श्रीराममाधव चिंगले | ज्ञान का स्वतःप्रामाण्य | 1955 | 2 | 15 |

| क्र. | नाम | लेख का शीर्षक | वर्ष | अंक | पृ.सं |
|------|------------------------------|---|------|-----|-------|
| 40. | श्री नी.र. वन्हाड पाण्डे | चार्वाक दर्शन | 1956 | 2 | 23 |
| 41. | प्रो. पी.टी. राजू | बौद्ध विज्ञानवाद | 1956 | 2 | 29 |
| 42. | श्री संगमलाल पाण्डेय | कैसीररकृत कांट्स फर्स्टक्रिटिक | 1956 | 2 | 43 |
| 43. | प्रो. हरिमोहन झा | हिन्दी में दर्शन साहित्य | 1956 | 2 | 49 |
| 44. | डॉ. पी.एस. शास्त्री | स्फोटवाद | 1956 | 3 | 1 |
| 45. | प्रो. श्री हरि मोहन झा | नव्यन्याय में अवच्छेदकता का व्यवहार | 1956 | 3 | 13 |
| 46. | श्री उमेश्वर सिंह बिश्त | कान्ट के अनुसार कार्य-कारण सिद्धान्त | 1956 | 3 | 23 |
| 47. | श्री संगमलाल पाण्डेय | नीट्शे के जीवन-दर्शन का नया मूल्यांकन | 1956 | 3 | 36 |
| 48. | श्री राम माधव चिंगले | विश्व-धर्म | 1956 | 3 | 50 |
| 49. | डॉ. भीखनलाल आत्रेय | दार्शनिक विचार | 1956 | 4 | 1 |
| 50. | प्रो. रामनाथ कौल | हेगल द्वारा तर्कशास्त्र का प्रत्ययन | 1956 | 4 | 11 |
| 51. | डॉ. नन्दकिशोर देवराज | भारतीय दर्शन और विश्वदर्शन | 1956 | 4 | 18 |
| 52. | डॉ. किशोरीशरण वर्मा | परिवार तथा शिक्षा की दार्शनिक पृष्ठभूमि | 1956 | 4 | 23 |
| 53. | डॉ. ब्रज गोपाल तिवारी | अनुमान में आगम की समस्या | 1956 | 4 | 26 |
| 54. | डॉ. शिवनारायणलाल श्रीवास्तव | शांकर दर्शन और अर्वाचीन दार्शनिक विचार | 1956 | 4 | 29 |
| 55. | श्री राजेन्द्रनाथ मुकर्जी | मायावाद और लीलावाद | 1956 | 4 | 34 |
| 56. | श्री अयोध्या प्रसाद अचल | आदर्श सामाजिक व्यवस्था | 1956 | 4 | 37 |
| 57. | श्री स्वामी भक्तिहृदय वन | स्वागत-भाषण | 1956 | 4 | 45 |
| 58. | प्रो. रामनाथ कौल | विशुद्ध विचार | 1957 | 1 | 1 |
| 59. | श्री संगमलाल पाण्डेय | समकालीन वेदान्त और उसकी खोज | 1957 | 1 | 8 |
| 60. | श्री राजेन्द्र स्वरूप भटनागर | अस्तित्ववाद क्या है ? | 1957 | 1 | 19 |
| 61. | श्री रामनाथ शर्मा | श्री अरविन्द के दर्शन की रूपरेखा | 1957 | 1 | 23 |

| क्र. | नाम | लेख का शीर्षक | वर्ष | अंक | पृ.सं |
|------|--------------------------|---|------|-----|-------|
| 84. | श्री रोहिताश्व कार्तिकेय | आत्मा का स्वभाव | 1958 | 2 | 53 |
| 85. | प्रो. याकूब मसीह | युंगीय अस्तित्ववाद | 1958 | 3 | 1 |
| 86. | श्री रामजी सिंह | जैन दर्शन में अद्वैतवादी प्रवृत्तियां | 1958 | 3 | 16 |
| 87. | श्री कृष्ण कुमार दीक्षित | स्पिनोजा का बुद्धिवाद | 1958 | 3 | 24 |
| 88. | श्री कृपाशंकर व्यास | तत्त्व विवेक | 1958 | 3 | 32 |
| 89. | डॉ. रामानन्द तिवारी | योग में ईश्वर | 1958 | 3 | 49 |
| 90. | श्री राजाजी सारस्वत | आत्मा का स्वभाव | 1958 | 3 | 54 |
| 91. | डॉ. शि.ना.ला. श्रीवास्तव | अलेक्जेंडर की ज्ञान मीमांसा | 1958 | 4 | 1 |
| 92. | श्री सुरेश चन्द्र | दार्शनिक संशयवाद | 1958 | 4 | 11 |
| 93. | श्री कृष्ण कुमार दीक्षित | ज्ञानार्जन में विज्ञान तथा दर्शन शास्त्र की परस्पर सापेक्ष भूमिकाएँ | 1958 | 4 | 21 |
| 94. | श्री कृपा शंकर व्यास | अद्वैत वेदांत में प्रमाण | 1958 | 4 | 30 |
| 95. | श्री नी.र. वन्हाड पांडे | योग की ज्ञान मीमांसा पर कुछ विचार | 1958 | 4 | 40 |
| 96. | डॉ. अनन्त गणेश जावडेकर | स्वत् प्रामाण्यवाद की सीमाएँ तथा उपलक्षण | 1958 | 4 | 48 |
| 97. | श्री प्रवास जीवन चौधरी | सत्य का अर्थ तथा प्रमाणीकरण | 1958 | 4 | 53 |
| 98. | श्री सुरेश चन्द्र | आत्मा का स्वभाव | 1958 | 4 | 59 |
| 99. | श्री धर्मराज काश्यप | गांधी का दर्शन | 1958 | 4 | 67 |
| 100. | पद्मभूषण डॉ. पी.टी. राजू | भारतीय दार्शनिकों के लिये वर्तमान तथा भविष्य में कर्तव्य | 1959 | 1 | 1 |
| 101. | डॉ. रामानन्द तिवारी | दर्शन और दर्शन का इतिहास | 1959 | 1 | 18 |
| 102. | प्रो. हरि मोहन झा | नव्य न्याय में तार्किक विश्लेषण | 1959 | 1 | 27 |
| 103. | डॉ. पद्मा अग्रवाल | मनोविश्लेषण तथा व्यक्तित्व विकास | 1959 | 1 | 36 |
| 104. | प्रो. एस.पी. कनल | आधुनिक दर्शन की नई समस्याएं | 1959 | 1 | 48 |
| 105. | श्री यशदेव शल्य | अर्थ और प्रमाणीकरण | 1959 | 1 | 55 |

| क्र. | नाम | लेख का शीर्षक | वर्ष | अंक | पृ.सं |
|------|------------------------------|---|------|-----|-------|
| 128. | श्री सुरेश चन्द्र | दार्शनिक संशयवाद-4 | 1959 | 4 | 24 |
| 129. | श्री श्री चन्द्र | जार्ज एडवर्ड मूर | 1959 | 4 | 38 |
| 130. | श्री नी.र. वन्हाड पांडे | गति और क्षणभंगवाद | 1959 | 4 | 49 |
| 131. | श्री रामशंकर भट्टाचार्य | प्रत्यक्षापलापकारी संप्रदाय का निर्देश | 1959 | 4 | 57-61 |
| 132. | डॉ. इन्द्र सेन | दर्शन की यथार्थ भावना | 1960 | 1 | 1 |
| 133. | प्रेमानन्द डॉ. इशरत हसन अनवर | भारतीय दर्शन में तार्किक विश्लेषण की पुट | 1960 | 1 | 12 |
| 134. | डॉ. अनन्त गणेश जावदेकर | ज्ञान का नीति शास्त्र | 1960 | 1 | 22 |
| 135. | श्री अर्जुन चौबे काश्यप | समाज मनोविज्ञान | 1960 | 1 | 34 |
| 136. | प्रो. विद्याधर शास्त्री | धर्म और राजनीति | 1960 | 1 | 42 |
| 137. | कृ. सुनयना दिवेदिया | भाषा तथा तथ्य चित्रण-1 | 1960 | 1 | 51 |
| 138. | श्री दया कृष्ण | भाषा तथा तथ्य चित्रण-2 | 1960 | 1 | 57 |
| 139. | डॉ. जड़ाऊ लाल मेहता | भाषा तथा तथ्य चित्रण-3 | 1960 | 1 | 62 |
| 140. | पद्मभूषण डॉ. भीखन लाल आत्रेय | परामनोविद्या-1 | 1960 | 1 | 66 |
| 141. | प्रो. हरि मोहन झा | परामनोविद्या-2 | 1960 | 1 | 71 |
| 142. | डॉ. सुखदेव सिंह शर्मा | सर्वोदय-दर्शन-1 | 1960 | 1 | 77 |
| 143. | श्री रामजी सिंह | सर्वोदय-दर्शन-2 | 1960 | 1 | 84 |
| 144. | श्री सुरेश चन्द्र | दार्शनिक विश्लेषण तथा नीतिमीमांसा | 1960 | 1 | 94 |
| 145. | डॉ. रमाशंकर श्रीवास्तव | विश्वधर्म-दर्शन | 1960 | 1 | 103 |
| 146. | श्री राजवंश सहाय 'हीरा' | प्लेटो का सौंदर्य-दर्शन | 1960 | 1 | 111 |
| 147. | डॉ. दुखन राम | उद्घाटन भाषण | 1960 | 1 | 118 |
| 148. | डॉ. या. मसीह | धर्म की फ्रायडवादी व्याख्या-2 | 1960 | 2 | 128 |
| 149. | प्रो. रामनाथ कौल | तार्किक प्रत्यक्षवाद की मान्यताओं की आलोचनात्मक समीक्षा-2 | 1960 | 2 | 140 |
| 150. | प्रो. हरि मोहन झा | परमार्थ दर्शन | 1960 | 2 | 144 |
| 151. | श्री नी.र. वन्हाड पाण्डे | सत्य और स्वतः प्रामाण्यवाद | 1960 | 2 | 149 |

| क्र. | नाम | लेख का शीर्षक | वर्ष | अंक | पृ.सं |
|------|--------------------------------|--|------|-----|-------|
| 174. | श्री कमल चन्द्र सोगानी | आत्मा का क्रमिक विकास | 1961 | 1 | 83 |
| 175. | डॉ. इशरत हसन अनवर | अलगिजाली | 1961 | 1 | 91 |
| 176. | श्री रामजी सिंह | श्रम-दर्शन | 1961 | 1 | 92 |
| 177. | श्री जनार्दन राय नागर | स्वागताध्यक्ष का भाषण | 1961 | 1 | 103 |
| 178. | प्रो. जगदानन्द पाण्डेय | भारतीय मनोविज्ञान | 1961 | 1 | 114 |
| 179. | डॉ. इन्द्रसेन | जीवन और दर्शन | 1961 | 1 | 130 |
| 180. | श्री नारायण शास्त्री द्रविड़ | सुख, सुखवाद और नीति | 1961 | 2 | 151 |
| 181. | डॉ. रामचन्द्र पांडेय | भारतीय अर्थ विज्ञान की मूलभूत समस्याएं | 1961 | 2 | 167 |
| 182. | श्री नी.र. वणहाड पांडे | जैन दर्शन में स्यादवाद | 1961 | 2 | 176 |
| 183. | श्री अरविन्द | क्रम विकास | 1961 | 2 | 184 |
| 184. | श्री. अ.गा. जावडेकर | सृजनशीलता | 1961 | 2 | 190 |
| 185. | श्री नारायण शास्त्री द्राविड़ | आत्मतत्त्वविवेक का बाह्यार्थ भंगवाद प्रकरण (अनुवाद) | 1961 | 2 | 193 |
| 186. | प्रो. नारायण शास्त्री द्राविड़ | मूर के नैतिक यथार्थवाद सम्बन्धी तर्क और उनका स्टिवेन्सन कृत प्रतिवाद | 1961 | 3 | 199 |
| 187. | श्री सुरेश चन्द्र | क्या अन्यों के अनुभव ज्ञेय हैं? | 1961 | 3 | 211 |
| 188. | डॉ. य. मसीह | तत्त्वमीमांसा का स्वरूप | 1961 | 3 | 216 |
| 189. | श्री अरविन्द | सत्य के लिये स्वाभाविक चिरन्तन खोज | 1961 | 3 | 228 |
| 190. | प्रो. नारायण शास्त्री द्राविड़ | आत्मतत्त्वविवेक का बाह्यार्थ भंगवाद प्रकरण (अनुवाद) | 1961 | 3 | 231 |
| 191. | डॉ. रामचन्द्र पांडेय | विशेषण और विशेष्य | 1961 | 3 | 236 |
| 192. | डॉ. इन्द्र सेन | मनुष्य ही अपना सर्वोत्तम मित्र या निकृष्ट शत्रु है | 1961 | 3 | 242 |
| 193. | प्रो. स.ल. भैरप्पा | श्री रवीन्द्र नाथ ठाकुर का कला-दर्शन | 1961 | 4 | 247 |
| 194. | डॉ. वी.एस. नरवणे | रवीन्द्र नाथ ठाकुर की सौन्दर्य-मीमांसा | 1961 | 4 | 253 |

| क्र. | नाम | लेख का शीर्षक | वर्ष | अंक | पृ.सं |
|------|--------------------------------|---|------|-----|-------|
| 216. | सुकुमार मुकर्जी | ईश्वर एवं ब्रह्म में संबंध | 1962 | 2 | 119 |
| 217. | प्रो. नारायण शास्त्री द्राविड़ | सुषुप्ति का वेदान्तीय विश्लेषण | 1962 | 2 | 124 |
| 218. | श्री अरविन्द | भौतिकवाद की समीक्षा | 1962 | 2 | 136 |
| 219. | प्रो. नारायण शास्त्री द्राविड़ | क्या दर्शन भाषा विश्लेषण है ? (वाद विवाद) | 1962 | 2 | 145 |
| 220. | डॉ. मंगल देव शास्त्री | धर्म-दर्शन | 1962 | 3 | 147 |
| 221. | डॉ. देवराज | भारतीय दार्शनिकों के नये दायित्व | 1962 | 3 | 163 |
| 222. | प्रो. ना.शा. द्राविड़ | सुषुप्ति का वेदान्तीय विश्लेषण | 1962 | 3 | 171 |
| 223. | डॉ. के.सच्चिदानन्द मूर्ति | मनुष्य और प्रकृति | 1962 | 3 | 179 |
| 224. | डॉ. इन्द्र सेन | वैयक्तिक स्वतंत्रता और योग | 1962 | 3 | 185 |
| 225. | श्री अरविन्द | संन्यासवाद की समीक्षा | 1962 | 3 | 195 |
| 226. | प्रो. निकुंज बिहारी बैनर्जी | अध्यक्षीय भाषा | 1962 | 4 | 207 |
| 227. | अनिरुद्ध झा | दार्शनिक ज्ञान | 1962 | 4 | 223 |
| 228. | ए.एफ. मार्खम | मनुष्य का स्वरूप और भाग्य | 1962 | 4 | 231 |
| 229. | जगत् प्रकाश आत्रेय | भारतीय मनोवैज्ञानिकों का आवश्यक कर्तव्य | 1962 | 4 | 241 |
| 230. | श्री चन्द्र | तथ्यों का स्वरूप-1 | 1962 | 4 | 247 |
| 231. | एल.पी.एन. सिन्हा | तथ्यों का स्वरूप-2 | 1962 | 4 | 253 |
| 232. | नारायण शास्त्री द्राविड़ | तथ्यों का स्वरूप-3 | 1962 | 4 | 257 |
| 233. | डॉ. एस.एस. शर्मा | नैतिक-मूल्यों का वैयक्तिक जीवन में चरितार्थन-1 | 1962 | 4 | 267 |
| 234. | वसन्त कुमार लाल | नैतिक-मूल्यों का वैयक्तिक जीवन में चरितार्थन-2 | 1962 | 4 | 275 |
| 235. | अर्जुन चौबे काश्यप | नैतिक-मूल्यों का वैयक्तिक जीवन में चरितार्थन-3 | 1962 | 4 | 283 |
| 236. | डॉ. रमाशंकर श्रीवास्तव | स्वामी विवेकानन्द-दर्शन की एक समीक्षा | 1962 | 4 | 287 |
| 237. | डॉ. शिवमूर्ति तिवारी | स्वामी विवेकानन्द का प्रेरणात्मक जीवन तथा उनका व्यावहारिक दर्शन | 1962 | 4 | 291 |

| क्र. | नाम | लेख का शीर्षक | वर्ष | अंक | पृ.सं |
|------|---------------------|--|------|-----|-------|
| 262. | कु. दुर्गा पन्त | —“— | 1963 | 4 | 261 |
| 263. | बसन्त कुमार लाल | —“— | 1963 | 4 | 269 |
| 264. | डॉ. अजित कु. सिन्हा | आधुनिक भौतिक विज्ञान में कार्य-कारण तथा अनिश्चितता के नियमों के दार्शनिक चिंतन | 1964 | 1 | 1 |
| 265. | रामजी सिंह | क्या मानव समाज का संगठन अहिंसा के आधार पर संभव है ? | 1964 | 1 | 7 |
| 266. | लक्ष्मीकान्त | एक दार्शनिक सन्देहवादी की युक्ति | 1964 | 1 | 19 |
| 267. | नवजीवन रस्तोगी | बाह्य पदार्थों को अनुमेयता और अभिनवगुप्त | 1964 | 1 | 27 |
| 268. | एल.पी.एन. सिन्हा | भारतीय दृष्टिभ्रम सिद्धान्तों का आलोचनात्मक अध्ययन | 1964 | 1 | 39 |
| 269. | ना.शा. द्राविड़ | प्रत्यक्ष की वेदान्तीय परिभाषा | 1964 | 1 | 47 |
| 270. | कार्यानन्द शर्मा | भारतीय दर्शन में निराशावाद | 1964 | 1 | 65 |
| 271. | मधुसूदन प्रसाद | धार्मिक जीवन और श्रद्धा | 1964 | 1 | 69 |
| 272. | अ.ग. जावडेकर | दर्शन शास्त्र में मूल्योन्मुखता की आवश्यकता | 1964 | 2 | 77 |
| 273. | नवजीवन रस्तोगी | काश्मीर-शैव दर्शन में पदार्थ का स्वरूप | 1964 | 2 | 83 |
| 274. | एल.पी.एन. सिन्हा | भ्रम और मतिभ्रम | 1964 | 2 | 98 |
| 275. | डॉ. इशरत हसन अनवर | कुरान में मायावाद | 1964 | 2 | 102 |
| 276. | ना.शा. द्राविड़ | आत्मतत्त्वविवेक का बाह्यार्थ भंगवाद प्रकरण | 1964 | 2 | 106 |
| 277. | यशदेव शल्य | ज्ञान की सीमाएं | 1964 | 2 | 111 |
| 278. | रमाकान्त त्रिपाठी | 'ज्ञान की सीमाएं' नामक लेख की आलोचनाओं का उत्तर | 1964 | 2 | 118 |
| 279. | यशदेव शल्य | प्रत्युत्तर | 1964 | 2 | 119 |
| 280. | यशदेव शल्य | प्रत्यक्ष की वेदान्तीय परिभाषा | 1964 | 2 | 121 |
| 281. | नारायण शा. द्राविड़ | उत्तर | 1964 | 2 | 126 |

| क्र. | नाम | लेख का शीर्षक | वर्ष | अंक | पृ.सं |
|------|----------------------|---|------|-----|-------|
| 304. | दरबारीलाल जैन कोठिया | सर्वज्ञता के सम्बन्ध में जैन दृष्टिकोण | 1965 | 1 | 7 |
| 305. | रामजीसिंह | —” — | 1965 | 1 | 17 |
| 306. | नवजीवन रस्तोगी | प्रत्यभिज्ञा का स्वरूप | 1965 | 1 | 35 |
| 307. | अनिरुद्ध झा | अवधारणा कोटि-भ्रम : एक विश्लेषण | 1965 | 1 | 51 |
| 308. | बसन्तकुमार लाल | सार्त्र की नास्तिकता : एक मूल्यांकन | 1965 | 1 | 59 |
| 309. | रमाशंकर मिश्र | नैतिक विश्लेषण के माडल | 1965 | 1 | 67 |
| 310. | यशदेव शल्य | अवधारणात्मक सापेक्षता और वास्तव | 1965 | 2 | 85 |
| 311. | हृदय नारायण मिश्र | जैन दर्शन में सर्वज्ञता की सम्भावनाएँ | 1965 | 2 | 66 |
| 312. | एल.पी.एन. सिंहा | क्या बर्कले अभौतिकवादी नहीं है ? | 1965 | 2 | 103 |
| 313. | अयोध्या प्रसाद अचल | आयुर्वेद में ज्ञानेन्द्रियों का स्वरूप | 1965 | 2 | 107 |
| 314. | रघुनाथ गिरि | सामान्य और विशेष | 1965 | 2 | 111 |
| 315. | संकठा प्रसाद सिंह | रवीन्द्रनाथ टैगोर के दर्शन में व्यक्ति का स्थान | 1965 | 2 | 128 |
| 316. | आर.सी. वड़बे | आधुनिक युग में गांधी के दर्शन का महत्व | 1965 | 2 | 133 |
| 317. | ब्रजगोपाल तिवारी | वाद-विवाद : स्पष्टीकरण | 1965 | 2 | 140 |
| 318. | विमलेन्दु ना. सिन्हा | मिश्र के "नैतिक विश्लेषण में माडल" | 1965 | 2 | 144 |
| 319. | दयाकृष्ण | भारतीय दर्शन के तीन संप्रत्यय | 1965 | 3 | 147 |
| 320. | पी.एस.एस. रामाराव | भारतीय तर्क में निषेध-प्रत्यय | 1965 | 3 | 161 |
| 321. | शुक्ला सरकार | मूल्य संप्रत्यय | 1965 | 3 | 170 |
| 322. | राममूर्ति लूम्बा | दर्शन और मनोविज्ञान | 1965 | 3 | 178 |

| क्र. | नाम | लेख का शीर्षक | वर्ष | अंक | पृ.सं |
|------|--------------------------|--|------|-----|-------|
| 343. | अ.ग. जावडेकर | ज्ञान-प्रामाण्य के सम्बन्ध में विभिन्न भूमिकाएं | 1966 | 2 | 59 |
| 344. | रामचन्द्र पांडेय | प्रत्यक्ष का प्रामाण्य | 1966 | 2 | 64 |
| 345. | प्रेमनाथ | अमरीकी मनोविज्ञान में अस्तित्वात्मक प्रवृत्तियां | 1966 | 2 | 73 |
| 346. | रमाकान्त त्रिपाठी | ईश्वर का स्वरूप | 1966 | 2 | 82 |
| 347. | रामनाथ शर्मा | समाजदर्शन : प्रत्यय और प्रणाली | 1966 | 2 | 87 |
| 348. | धर्मन्द्र गोयल | दार्शनिक पद्धति | 1966 | 2 | 95 |
| 349. | चांदमल | —“— | 1966 | 2 | 102 |
| 350. | यशदेव शल्य | —“— | 1966 | 2 | 109 |
| 351. | सुनयना दिवेटिया | क्या नैतिक वाक्य प्रकथनात्मक हैं | 1966 | 2 | 116 |
| 352. | चांदमल | —“— | 1966 | 2 | 121 |
| 353. | हरिमोहन झा | नव्यन्याय में निषेध का विश्लेषण | 1966 | 2 | 125 |
| 354. | केवलकृष्ण मित्तल | भाषा, अनुभव, विचार, अथवा..? | 1966 | 2 | 127 |
| 355. | नित्यानन्द मिश्र | स्ट्रॉसन का व्यक्ति-सिद्धान्त | 1966 | 2 | 133 |
| 356. | जी.एस. महाजनी | स्वागत भाषण | 1966 | 2 | 141 |
| 357. | चांदमल | न्याय का स्वरूप | 1966 | 3 | 146 |
| 358. | सुकुमार मुकर्जी | क्या व्यक्तित्वधारी ईश्वर असम्पूर्ण है ? | 1966 | 3 | 156 |
| 359. | आद्यप्रसाद | गोरखनाथ द्वारा प्रतिपादित नाथ-योग में मनोविज्ञान | 1966 | 3 | 160 |
| 360. | अध्योध्याप्रसाद अचल | मनोरोग-निदान में रज और तम का महत्व | 1966 | 3 | 169 |
| 361. | हरसिद्ध म. जोशी | तत्त्वज्ञान का आदर्शवादी प्रत्यय | 1966 | 3 | 169 |
| 362. | गोविन्दचन्द्र पाण्डे | मानव पर्येषणा और दार्शनिक विमर्श | 1966 | 4 | 195 |
| 363. | नारायण शास्त्री द्राविड़ | कृष्णचन्द्र भट्टाचार्य के अनुसार दर्शन का स्वरूप | 1966 | 4 | 204 |

| क्र. | नाम | लेख का शीर्षक | वर्ष | अंक | पृ.सं |
|------|----------------------|--|------|-----|-------|
| 388. | काशीनाथ उपाध्याय | अविद्या का स्वरूप | 1967 | 4 | 188 |
| 389. | रामचन्द्र त्रिवेदी | अविद्या का स्वरूप | 1967 | 4 | 204 |
| 390. | बसन्तकुमार लाल | सत्य एवं सौन्दर्य | 1967 | 4 | 211 |
| 391. | हजारीलाल माहेश्वरी | —”— | 1967 | 4 | 220 |
| 392. | एस.एल. भैरप्पा | —”— | 1967 | 4 | 228 |
| 393. | केवल कृष्ण मित्तल | अस्तित्व की समस्या | 1968 | 1 | 1 |
| 394. | गिरधारीलाल चतुर्वेदी | ज्ञान का स्व-प्रकाशत्व लक्षण | 1968 | 1 | 9 |
| 395. | ला. पंचानन सिन्हा | बर्कले के आन्तरिक प्रत्यक्ष के समर्थन में | 1968 | 1 | 13 |
| 396. | नन्दकिशोर शर्मा | नीतिमीमांसा में प्राकृतिकता-वादी दोष | 1968 | 1 | 20 |
| 397. | रामजी सिंह | साध्य-साधन विवेक | 1968 | 1 | 26 |
| 398. | धमेन्द्र गोयल | समाज-चिन्तन और क्रान्ति | 1968 | 1 | 36 |
| 399. | यशदेव शल्य | भाषा | 1968 | 1 | 41 |
| 400. | गोपालबिहारी माथुर | इतिहास के अध्ययन में सिद्धांत का उपयोग | 1968 | 1 | 53 |
| 401. | लक्ष्मीकांत अवरथी | पर्स का चिह्न-सिद्धांत | 1968 | 1 | 68 |
| 402. | अभेदानन्द | न्याय प्रमाण-मीमांसा | 1968 | 2 | 75 |
| 403. | यशदेव शल्य | प्राकृतिक विज्ञान | 1968 | 2 | 92 |
| 404. | कन्हैयालाल | कृष्णचन्द्र भट्टाचार्य के अनुसार विषय क स्वरूप | 1968 | 2 | 104 |
| 405. | संकटाप्रसाद सिंह | वेदान्त और बौद्धमत | 1968 | 2 | 112 |
| 406. | यशदेव शल्य | नैतिक मूल्य | 1968 | 3 | 149 |
| 407. | दिनेशचन्द्र माथुर | सौन्दर्य-बोध और सत्य | 1968 | 3 | 163 |
| 408. | दयालशरण वर्मा | आधुनिकता का समाज-दर्शन और नव-रचना के प्रश्न | 1968 | 3 | 167 |
| 409. | हरीमोहन झा | अध्यक्षीय भाषण | 1968 | 4 | 185 |
| 410. | ह. माहेश्वरी | गीता-धर्म | 1968 | 4 | 193 |
| 411. | ल. पंचानन सिन्हा | चाक्षुष प्रत्यक्ष की उलझन और उसका समाधान | 1968 | 4 | 203 |

| क्र. | नाम | लेख का शीर्षक | वर्ष | अंक | पृ.सं |
|------|------------------------|---|------|-----|-------|
| 433. | हजारी लाल माहेश्वरी | हिन्दू दर्शन की मूल प्रेरणा | 1969 | 3-4 | 125 |
| 434. | कु. रूपरेखा वर्मा | विश्लेषणात्मक-तथ्यात्मक | 1969 | 3-4 | 133 |
| 435. | लाला पंचानन सिंह | प्रत्यक्ष-सिद्धांतों का आलोचनात्मक अध्ययन | 1969 | 3-4 | 137 |
| 436. | रामचन्द्र त्रिवेदी | अद्वैत दर्शन में जगत् की व्याख्या | 1969 | 3-4 | 143 |
| 437. | जयेन्द्र प्रसाद शुक्ल | नव्य न्याय में स्वरूप संबंध | 1969 | 3-4 | 151 |
| 438. | दिवाकर पाठक | ह्यूम एवं एयर के नीति- संबंधी विचार | 1969 | 3-4 | 159 |
| 439. | रेवती रमण पाण्डेय | रवीन्द्र का प्रकृति-दर्शन | 1969 | 3-4 | 167 |
| 440. | रमेशदत्त मिश्र | तर्क व्याक्य की अपरिहार्यता | 1969 | 3-4 | 173 |
| 441. | कु. छाया राय | अस्तित्ववाद : आक्षेप एवं समाधान | 1969 | 3-4 | 179 |
| 442. | वेद प्रकाश वर्मा | स्टीवेन्सन के सम्बन्धवाद का आलोचनात्मक मूल्यांकन | 1969 | 3-4 | 189 |
| 443. | चन्द्रानन ठाकुर | नवीन वस्तुवाद : एक सर्वेक्षण (1) | 1969 | 3-4 | 209 |
| 444. | देवेन्द्र कुमार सिंह | प्रकृतिवादी दोष | 1969 | 3-4 | 229 |
| 445. | डॉ. श्री प्रकाश दुबे | रुडोल्फ ओटो की दृष्टि में भगवद्गीता | 1969 | 3-4 | 237 |
| 446. | राघवेन्द्र देव दीक्षित | पी.एफ. स्ट्रॉसन का 'तार्किक सिद्धान्त की भूमिका' | 1969 | 3-4 | 241 |
| 447. | प्रभुलाल भटनागर | उद्घाटन भाषण | 1970 | 1-2 | 251 |
| 448. | अनन्तगणेश जावडेकर | ज्ञान के सम्बन्ध में कुछ विचार | 1970 | 1-2 | 255 |
| 449. | अजित कुमार सिंह | तार्किक नियम एवं वैज्ञानिक विधि के आधार पर मानव सभ्यता का विकास | 1970 | 1-2 | 269 |
| 450. | बसंतकुमार लाल | दार्शनिक की उलझन | 1970 | 1-2 | 281 |
| 451. | संगमलाल पाण्डेय | राजनीतिक प्रतिबद्धता | 1970 | 1-2 | 291 |
| 452. | मधुसूदन प्रसाद | सत् का स्वरूप | 1970 | 1-2 | 301 |
| 453. | लाला पंचानन सिंह | बर्कले एवं भौतिक वस्तुएं | 1970 | 1-2 | 305 |
| 454. | केवलकृष्ण मित्तल | भेद, अभेद, अथवा? | 1970 | 1-2 | 311 |

| क्र. | नाम | लेख का शीर्षक | वर्ष | अंक | पृ.सं |
|------|----------------------|---|------|-----|-------|
| 474. | मगनबिहारीलाल दीक्षित | सत् की द्वैतवादी धारणा एक काश्मीर-शैव दृष्टिकोण | 1972 | 2 | 83 |
| 475. | अभेदानन्द | सत्-चित्-आनन्द ब्रह्म | 1972 | 2 | 99 |
| 476. | ना.शा. द्राविड़ | बहुकोटिक तर्क-कुछ समस्याएं | 1972 | 2 | 103 |
| 477. | रामजी सिंह | अवक्तव्य-विश्लेषण | 1972 | 2 | 113 |
| 478. | बेंजामिन खान् | क्या मनुष्य को ईश्वर की आवश्यकता है? | 1972 | 2 | 121 |
| 479. | भगवती | प्रत्यक् और पराक् | 1972 | 2 | 131 |
| 480. | गोविन्दचन्द्र पांडे | मूल्यों का और उनकी मीमांसा का ऐतिहासिक विकास | 1972 | 3 | 145 |
| 481. | दयाकृष्ण | ज्ञानमीमांसा | 1972 | 3 | 169 |
| 482. | अभेदानन्द | जगन्मिथ्यात्ववाद और बौद्धिक विज्ञानवाद | 1972 | 3 | 179 |
| 483. | रामजी सिंह | “अथातो ब्रह्मजिज्ञासा” सूत्र में “अथ” का अर्थ और महत्व | 1972 | 3 | 197 |
| 484. | आभा चतुर्वेदी | हेअर : नैतिक युक्ति का स्वरूप | 1972 | 3 | 207 |
| 485. | आभा चतुर्वेदी | शिल्क एक प्रकृतिवादी के रूप में | 1972 | 3 | 213 |
| 486. | राजनारायण | सामाजिक विज्ञानों की वैज्ञानिक पदस्थिति | 1972 | 4 | 218 |
| 487. | रूपरेखा वर्मा | सत्य और विश्वास | 1972 | 4 | 232 |
| 488. | दयाकृष्ण | ज्ञानमीमांसा-5 | 1972 | 4 | 238 |
| 489. | अभेदानन्द | जगन्मिथ्यात्ववाद और शून्यवाद | 1972 | 4 | 251 |
| 490. | किरीट जोशी | श्री अरविन्द और नयी समाज-व्यवस्था | 1972 | 4 | 258 |
| 491. | ह. माहेश्वरी | श्री अरविन्द-दर्शन में चैतन्य-मीमांसा | 1972 | 4 | 274 |
| 492. | केशवदेव आचार्य | श्री अरविन्द-दर्शन में विश्व -सृष्टि का उद्देश्य | 1972 | 4 | 284 |
| 493. | विश्वनाथ भट्टाचार्य | आवश्यकता है- नूतन दृष्टिकोण की | 1973 | 1 | 1 |

| क्र. | नाम | लेख का शीर्षक | वर्ष | अंक | पृ.सं |
|------|----------------------------------|--|------|-----|-------|
| 515. | कृष्णकांत शुल्क | प्रत्यभिज्ञा-दर्शन में परमतत्व का स्वरूप | 1973 | 4 | 231 |
| 516. | या. मसीह | प्रत्ययवादी तत्त्वमीमांसा का स्वरूप | 1973 | 4 | 241 |
| 517. | केदारनाथ तिवारी | क्या अनीश्वरवाद धर्म नहीं है? | 1973 | 4 | 246 |
| 518. | जगदीशसहाय श्रीवास्तव | अनुभववाद के मताग्रहों की प्रतिरक्षा | 1973 | 4 | 251 |
| 519. | वी.के. भारद्वाज एवं एस. भारद्वाज | आपादन और अनुबन्धन | 1973 | 4 | 259 |
| 520. | यशदेव शल्य | मूल्य-मीमांसा | 1974 | 1 | 1 |
| 521. | नन्दकिशोर शर्मा | भारतीय दर्शन में ज्ञान का स्वरूप | 1974 | 1 | 13 |
| 522. | मगनबिहारीलाल दीक्षित | भारतीय दर्शन में भेद का स्वरूप | 1974 | 1 | 31 |
| 523. | वेदप्रकाश वर्मा | संकल्प-स्वातंत्र्य और नैतिक उत्तरदायित्व की समस्या | 1974 | 1 | 41 |
| 524. | राजेन्द्र स्वरूप भटनागर | स्टेट-कृत हेगल (अनुवाद) | 1974 | 1 | 51 |
| 525. | राजाराम द्राविड़ | प्रामाण्यवाद | 1974 | 2 | 63 |
| 526. | वेदप्रकाश वर्मा | क्या धार्मिक वाक्य सार्थक हैं? | 1974 | 2 | 77 |
| 527. | यशदेव शल्य | समकालीन दार्शनिक परिस्थिति | 1974 | 2 | 93 |
| 528. | धीरेन्द्र शर्मा | भारतीय दार्शनिक का सामाजिक दायित्व | 1974 | 2 | 101 |
| 529. | योगिनी निघोस्कर | व्यष्टि (टिप्पणी) | 1974 | 2 | 105 |
| 530. | अनु. राजेन्द्रस्वरूप भटनाकर | स्टेट-कृत हेगल | 1974 | 2 | 109 |
| 531. | यशदेव शल्य | हमारा जातीय अनुभव | 1974 | 3 | 121 |
| 532. | लक्ष्मीनिधि शर्मा | धार्मिक अनुभूति का स्वरूप | 1974 | 3 | 134 |
| 533. | कमलचन्द्र सोगानी | निश्चय और व्यवहार (गोष्ठी) | 1974 | 3 | 141 |
| 534. | सागरमल जैन | जैन दर्शन में निश्चय और व्यवहार | 1974 | 3 | 147 |
| 535. | अनंत गणेश जावडेकर | मानव-समता (गोष्ठी) | 1974 | 3 | 158 |
| 536. | रघुनाथ गिरि | भारतीय तर्क-शैली | 1974 | 3 | 137 |

| क्र. | नाम | लेख का शीर्षक | वर्ष | अंक | पृ.सं |
|------|----------------------|--|------|-----|-------|
| 560. | गोविन्दचन्द्र पांडे | बौद्ध दृष्टि के आलोक में सौन्दर्यशास्त्र | 1975 | 3 | 161 |
| 561. | सतिन्दर महाजन | समकालीन भारतीय दार्शनिक परिस्थिति | 1975 | 3 | 163 |
| 562. | संगमलाल पांडेय | स्याद्वाद के विरोधाभास | 1975 | 3 | 171 |
| 563. | वेदप्रकाश वर्मा | क्या वर्तमान युग में मोक्ष की अवधारणा उपादेय है ? | 1975 | 3 | 179 |
| 564. | जगदीशसहाय श्रीवास्तव | प्ररूप-सिद्धान्त | 1975 | 3 | 188 |
| 565. | भगवती | कांट: निर्बन्ध-आत्म का कल्पना-बन्धन | 1975 | 3 | 193 |
| 566. | नलिनी शुक्ला | धर्म-दर्शन | 1975 | 3 | 212 |
| 567. | राजेन्द्र पांडेय | दर्शन में 'अवक्तव्य' की अवधारणा | 1975 | 4 | 219 |
| 568. | यशदेव शल्य | आत्म और अनात्म | 1975 | 4 | 228 |
| 569. | संगमलाल पाण्डेय | मूल्यों की त्याग-रूपता का सिद्धान्त | 1975 | 4 | 234 |
| 570. | ह. माहेश्वरी | श्री अरविन्द एवं भारतीय दर्शन का अभीप्सात्मक स्वरूप | 1975 | 4 | 241 |
| 571. | बसन्तकुमार लाल | लोकतन्त्र : भारतीय सन्दर्भ में | 1975 | 4 | 248 |
| 572. | सागरमल जैन | अद्वैतवाद और आचार-दर्शन की सम्भावना | 1975 | 4 | 258 |
| 573. | केवलकृष्ण मित्तल | बौद्ध परिप्रेक्ष्य में व्यक्तित्व की इदंता | 1975 | 4 | 263 |
| 574. | वेदप्रकाश वर्मा | आधुनिक आंग्ल दर्शन में नैतिक अंतःप्रज्ञावाद | 1975 | 4 | 268 |
| 575. | छाया राय | नीतिमत्ता की कसौटी : गीता की "बुद्धि" तथा कांट का "संकल्प" | 1976 | 1 | 1 |
| 576. | कृष्णकांत शुक्ल | प्रत्यभिज्ञा दर्शन में माया | 1976 | 1 | 9 |
| 577. | धर्मेन्द्र गोयल | भाषा-विश्लेषण और हिन्दी | 1976 | 1 | 15 |
| 578. | जे.फाईस | एक निरर्थक प्रश्न ? | 1976 | 1 | 21 |

| क्र. | नाम | लेख का शीर्षक | वर्ष | अंक | पृ.सं |
|------|-------------------------|--|------|-----|-------|
| 600. | यशदेव शल्य | इम्मेनुअल कांट : तत्त्वमीमांसा | 1977 | 1 | 1 |
| 601. | वेदप्रकाश वर्मा | कांट का धर्मदर्शन | 1977 | 1 | 39 |
| 602. | राजेन्द्र प्रसाद पांडेय | डॉ. पांडे का संस्कृति-दर्शन | 1977 | 2 | 63 |
| 603. | हर्षनारायण | श्रामण्य और निर्वाण का लोकव्यवस्था से सम्बन्ध | 1977 | 2 | 99 |
| 604. | छाया राय | सिक्ख धर्म में ईश्वर की एकता | 1977 | 2 | 111 |
| 605. | रमाशंकर श्रीवास्तव | भारतीय दर्शन का भावी स्वरूप | 1977 | 3 | 123 |
| 606. | यशदेव शल्य | हमारी राजनैतिक परिस्थिति | 1977 | 3 | 129 |
| 607. | उमाचरण झा | बुद्ध-दर्शन में दुःख एवं दुःख आर्य-सत्य की मीमांसा | 1977 | 3 | 135 |
| 608. | बह्ममित्र अवस्थी | श्रद्धा का महत्व | 1977 | 3 | 141 |
| 609. | सतिन्दर महाजन | समाज-दर्शन: कुछ प्रश्न | 1977 | 3 | 151 |
| 610. | विमलेन्दुनारायण सिंह | आकारिक तर्कशास्त्र एवं दार्शनिक विवेचन | 1977 | 3 | 159 |
| 611. | जगन्नाथ उपाध्याय | बौद्ध दृष्टि में अस्तित्व की अवधारणा और उसका सामाजिक सन्दर्भ | 1977 | 3 | 163 |
| 612. | नित्यानन्द मिश्र | वैयक्तिक अनन्यता | 1977 | 3 | 169 |
| 613. | देवकीनन्दन द्विवेदी | —”— | 1977 | 3 | 177 |
| 614. | नं.कि. देवराज | पुरुषार्थ | 1977 | 3 | 185 |
| 615. | ह. माहेश्वरी | गीतोक्त बुद्धि एवं बुद्धियोग | 1977 | 4 | 189 |
| 616. | संगमलाल पांडेय | काश्मीर शैवमत की परीक्षा | 1977 | 4 | 203 |
| 617. | सागरमल जैन | मूल्य-बोध की सापेक्षता | 1977 | 4 | 221 |
| 618. | जे. फाइस | धर्म-ग्रंथों पर दार्शनिक चिन्तन | 1977 | 4 | 227 |
| 619. | अंजनीकुमार सिंह | श्री अरविन्द-दर्शन में परात्पर तत्व | 1977 | 4 | 237 |
| 620. | रामजी सिंह | सम्पूर्ण क्रांति: एक अध्ययन | 1977 | 4 | 243 |
| 621. | यशदेव शल्य | संपादक की अल्विदा | 1977 | 4 | 251 |
| 622. | प्रो. शिवकुमार मिश्र | दर्शन: सामाजिक परिवर्तन के एक अस्त्र के रूप में | 1978 | 1 | 9 |

| क्र. | नाम | लेख का शीर्षक | वर्ष | अंक | पृ.सं |
|------|---------------------------|---|------|-----|-------|
| 643. | रेनू खन्ना | शुद्ध आकारवाद, संभावनायें व सीमा | 1978 | 3 | 170 |
| 644. | शरद कुमार बघेल | बौद्ध चिन्तन धारा में सर्वास्तिवाद का स्थान | 1978 | 3 | 175 |
| 645. | भगवती | वसुबन्धु का विज्ञानवाद | 1978 | 3 | 182 |
| 646. | डॉ. सागरमल जैन | जैन दर्शन के 'तर्क प्रमाण' का आधुनिक सन्दर्भों में मूल्यांकन | 1978 | 4 | 189 |
| 647. | श्रीकृष्ण गोपाल शर्मा | ज्ञान की समस्या की समीक्षा (बट्रेण्ड रसल के लेख के संदर्भ में) | 1978 | 4 | 210? |
| 648. | पाण्डेय, आर.डी. 'गंभीर' | तर्कना एवं प्रतिभज्ञान (एक अस्तित्ववादी विवेचन) | 1978 | 4 | 217 |
| 649. | डॉ. लक्ष्मण प्रसाद मिश्र | पुरुषार्थ एवं कृपा | 1978 | 4 | 222 |
| 650. | डॉ. संगमलाल पाण्डे | नव्य दर्शन की ओर | 1979 | 1-2 | 1 |
| 651. | स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती | योग दर्शन और विश्व शान्ति | 1979 | 1-2 | 9 |
| 652. | डॉ. वेदप्रकाश वर्मा | धार्मिक कथनों का अर्थबोध और ईश्वर सम्बन्धी आस्था | 1979 | 1-2 | 10(ब) |
| 653. | डॉ. कृष्णमोहन झा | तर्क के आयाम | 1979 | 1-2 | 16 |
| 654. | डॉ. सुश्री भुवन चन्देल | भारतीय सन्दर्भ में नीति और समाज दर्शन के कुछ मूल प्रश्न | 1979 | 1-2 | 21 |
| 655. | डॉ. रमाकान्त त्रिपाठी | अद्वैत वेदान्त में ईश्वर और भक्ति | 1979 | 1-2 | 25 |
| 656. | डॉ. रामजी सिंह | सम्पूर्ण क्रान्ति की शव परीक्षा | 1979 | 1-2 | 33 |
| 657. | डॉ. राननाथ शर्मा | भारतीय समाज दर्शन में परम्परा बनाम आधुनिकता | 1979 | 1-2 | 40 |
| 658. | डॉ. राजेन्द्र कुमार गर्ग | नैतिकता और न्याय | 1979 | 1-2 | 46 |
| 659. | डॉ. सागरमल जैन | प्रवर्तक एवं निवर्तक धर्मों का मनोवैज्ञानिक विकास एवं दार्शनिक और सांस्कृतिक प्रदेय | 1979 | 1-2 | 49 |

| क्र. | नाम | लेख का शीर्षक | वर्ष | अंक | पृ.सं |
|------|--------------------------|--|------|-----|-------|
| 682. | डॉ. सागरमल जैन | नैतिक प्रतिमान, एक या अनेक? | 1980 | 1-2 | 21 |
| 683. | श्री केदारनाथ तिवारी | आकारपरक बनाम आकारनिरपेक्ष तर्कशास्त्र | 1980 | 1-2 | 26 |
| 684. | डॉ. ह. माहेश्वरी | धर्म-दर्शन समुच्चय भगवद्गीता का संदर्भ | 1980 | 1-2 | 35 |
| 685. | श्री यशदेव शल्य | तुलनात्मक दर्शन की अवधारणा | 1980 | 1-2 | 53 |
| 686. | डॉ. पी.बी. विद्यार्थी | भगवान् स्वामिनारायण का नव्यविशिष्टाद्वैत वेदांत | 1980 | 1-2 | 68 |
| 687. | डॉ. न. कि. देवराज | स्वातन्त्र्योत्तर भारत दर्शन | 1980 | 1-2 | 91 |
| 688. | डॉ. श्रीप्रकाश दुबे | भारतीय दर्शन के पच्चीस वर्ष पर संगोष्ठी | 1980 | 1-2 | 97 |
| 689. | डॉ. नारायण भगत | भगवान स्वामिनारायण की दृष्टि में सांख्यदर्शन | 1980 | 1-2 | 104 |
| 690. | साधु आत्मस्वरूपदासजी | स्वामिनारायणीय मुक्ति व्यवस्था | 1980 | 1-2 | 111 |
| 691. | प्रा. रमेश म. दवे | स्वामिनारायणीय अक्षरब्रह्म मीमांसा | 1980 | 1-2 | 116 |
| 692. | प्रा. पूर्णिमा म. दवे | रामानुजीय एवं स्वामिनारायणीय भक्ति-प्रपत्ति विचारधारा | 1980 | 1-2 | 123 |
| 693. | डॉ. रामजी सिंह | अहिंसा का भावात्मक स्वरूप | 1980 | 1-2 | 129 |
| 694. | डॉ. देवराज | सम्पादक की बात | 1980 | 3-4 | 1 |
| 695. | डॉ. हर्ष नारायण | भारतीय दर्शन के 25 वर्ष- कुछ प्रतिक्रियाएं | 1980 | 3-4 | 3 |
| 696. | डॉ. के.एल. शर्मा | कृष्णचन्द्र भट्टाचार्य की दार्शनिक चिन्तन प्रणाली | 1980 | 3-4 | 10 |
| 697. | डॉ. सुश्री अनिल तनेजा | न्याय-मीमांसा निर्णय प्रणाली | 1980 | 3-4 | 19 |
| 698. | डॉ. धमेन्द्र गोयल | मूल्य और प्रतिबद्धता | 1980 | 3-4 | 23 |
| 699. | डॉ. रामजी सिंह | राजनैतिक प्रतिबद्धता | 1980 | 3-4 | 28 |
| 700. | यशदेव शल्य | मनुष्य और जगत् | 1980 | 3-4 | 32 |
| 701. | प्रो. रमाशंकर श्रीवास्तव | विलियम जेम्स के धार्मिक विचारों का मूल्यांकन | 1980 | 3-4 | 41 |

अखिल भारतीय दर्शन-परिषद्

दार्शनिक-त्रैमासिक के आलेखों की सूची-II

| क्र. | नाम | लेख का शीर्षक | वर्ष | अंक | पृ.सं. |
|------|-----------------------------|--|------|-----|--------|
| 1. | डॉ. वेदप्रकाश वर्मा | राय का मानवतावादी दर्शन | 1981 | 1 | 1 |
| 2. | डॉ. राजेन्द्रप्रसाद पाण्डेय | दर्शन, समाज और प्रगति | 1981 | 1 | 12 |
| 3. | डॉ. जे. फाइस | रहस्यवाद और दर्शन का पारस्परिक सम्बन्ध | 1981 | 1 | 22 |
| 4. | डॉ. डी.डी. बन्दिष्टे | 'बहुसाधनवाद': एक परीक्षण | 1981 | 1 | 38 |
| 5. | डॉ. चन्द्रनारायण मिश्र | नागार्जुन का राजदर्शन | 1981 | 1 | 42 |
| 6. | सुश्री वसुन्धरा हर्डीकर | भारतीय चिन्तन का ध्रुवीकरण : निर्वाण के सन्दर्भ में | 1981 | 1 | 48 |
| 7. | डॉ. (कु.) गीतारानी अग्रवाल | धर्मशास्त्रों में समाजदर्शन की अन्तर्दृष्टि | 1981 | 1 | 53 |
| 8. | डॉ. रामजी सिंह | जीवन और दर्शन | 1981 | 2 | 1 |
| 9. | डॉ. रघुनाथ गिरि | राजयोग एवं क्रिया योग | 1981 | 2 | 10 |
| 10. | डॉ. सागरमल जैन | सत्ता कितनी वाच्य कितनी अवाच्य? जैन दर्शन के सन्दर्भ में | 1981 | 2 | 31 |
| 11. | डॉ. डी.डी. बन्दिष्टे | ईश्वर साक्षात्कार का दार्शनिक परीक्षण | 1981 | 2 | 42 |
| 12. | डॉ. लक्ष्मण प्रसाद मिश्र | शांकर वेदान्त में 'विषयता' | 1981 | 2 | 52 |
| 13. | डॉ. रमेशचन्द्र | 'तत्त्व संग्रह' में शब्दार्थ-परीक्षा: नैयायिक दृष्टि | 1981 | 3-4 | 1 |
| 14. | कु. माया दास | न्याय-वैशेषिक एवं पूर्वमीमांसा दर्शनों की दृष्टि में प्रवृत्ति | 1981 | 3-4 | 13 |
| 15. | डॉ. यच.यन. मिश्र | मानव का स्वरूप- कार्ल जैस्पर्स | 1981 | 3-4 | 28 |
| 16. | डॉ. बृजकिशोर पाण्डेय | आचार्य समन्तभद्र का सापेक्ष-निरपेक्ष सिद्धान्त | 1981 | 3-4 | 35 |

| क्र. | नाम | लेख का शीर्षक | वर्ष | अंक | पृ.सं |
|------|------------------------------|--|------|-----|-------|
| 35. | डॉ. जयेन्द्र प्र. जे.शुक्ल | विषयिता-विषयता | 1982 | 2-3 | 38 |
| 36. | डॉ. रेवतीरमण पाण्डेय | विषयता | 1982 | 2-3 | 44 |
| 37. | प्रो. एस.के. सिंह | दार्शनिक का दायित्व | 1982 | 2-3 | 51 |
| 38. | प्रो. आर.पी. वर्मा | —“— | 1982 | 2-3 | 58 |
| 39. | डॉ. रामानन्द मिश्र | —“— | 1982 | 2-3 | 63 |
| 40. | डॉ.एस.एन. पाण्डेय | —“— | 1982 | 2-3 | 70 |
| 41. | डॉ. विजय कु. भारद्वाज | प्रमाण और सैद्धान्तिक मतभेद | 1983 | 1-2 | 1 |
| 42. | डॉ. गोरखनाथ मिश्र | अनुमान और आपादन | 1983 | 1-2 | 10 |
| 43. | डॉ. महेश भारतीय | परिवर्तन का स्वरूप तथा सांख्य परिणामवाद | 1983 | 1-2 | 25 |
| 44. | डॉ. रेवतीरमण पाण्डेय | विवर्तवाद : एक संक्षिप्त परिशीलन | 1983 | 1-2 | 30 |
| 45. | डॉ. रामनाथ शर्मा | भारतीय जीवन एवं शिक्षा | 1983 | 1-2 | 35 |
| 46. | श्री चन्द्रप्रकाश श्रीवास्तव | अस्तित्ववादी चिन्तन में विज्ञान एवं दर्शन का स्वरूप | 1983 | 1-2 | 45 |
| 47. | डॉ. गायत्री सिन्हा | रॉयस के दर्शन में आत्मतत्त्व -विवेचन | 1983 | 1-2 | 54 |
| 48. | डॉ. सुश्री भगवती | आत्म और अनात्म | 1983 | 1-2 | 69 |
| 49. | डॉ. श्यामारमण पाण्डेय | कालिदास के साहित्य में ईश्वरतत्त्व | 1983 | 1-2 | 75 |
| 50. | डॉ. दिवाकर पाण्डेय | बौद्ध मानवतावाद | 1983 | 1-2 | 88 |
| 51. | पाण्डेय रामदास 'गंभीर' | शक्ति : स्वरूप अर्जन एवं लक्ष्य | 1983 | 3-4 | 1 |
| 52. | डॉ. भगवन्त सिंह | जैन दर्शन एवं अद्वैत वेदान्त | 1983 | 3-4 | 13 |
| 53. | डॉ. सागरमल जैन | जैन दर्शन के परिप्रेक्ष्य में नैतिक और धार्मिक कर्तव्यता का स्वरूप | 1983 | 3-4 | 20 |
| 54. | डॉ. विभा रानी दुबे | रसो वै स : | 1983 | 3-4 | 25 |
| 55. | हरि सिंह | चार्वाकीय सुखवाद का समीक्षात्मक विवेचन | 1983 | 3-4 | 33 |
| 56. | राजदेव दुबे | याज्ञवल्क्य-स्मृति में दार्शनिक विचार | 1983 | 3-4 | 43 |

| क्र. | नाम | लेख का शीर्षक | वर्ष | अंक | पृ.सं |
|------|---------------------------|---|------|-----|-------|
| 76. | डॉ. अभेदानन्द | न्याय-समीक्षा | 1984 | 2 | 75 |
| 77. | डॉ. रामशंकर मिश्र | धर्म और जीवन-दर्शन | 1984 | 3 | 1 |
| 78. | डॉ. लक्ष्मी सक्सेना | सृजनात्मक धर्म के द्विविध आयाम | 1984 | 3 | 19 |
| 79. | डॉ. जयेन्द्र जे. शुक्ल | सर्व धर्म समन्वय | 1984 | 3 | 49 |
| 80. | जे. फाइस | ज्ञान की सम्पूर्णता में दर्शन का स्थान | 1984 | 4 | 1 |
| 81. | डॉ. जगदीश सहाय श्रीवास्तव | संश्लेषणात्मक अनुभव-निरपेक्ष सत्य | 1984 | 4 | 17 |
| 82. | डॉ. महाप्रभुलाल गोस्वामी | भारतीय दर्शन समन्वय दिग्दर्शन | 1984 | 4 | 25 |
| 83. | कमलाकर मिश्र | क्या हिन्दू धर्म व्यक्तिवादी है? | 1984 | 4 | 33 |
| 84. | डॉ. रामनारायण व्यास | भगवद्गीता : एक समाज दर्शनात्मक दृष्टिकोण | 1984 | 4 | 43 |
| 85. | कृष्णकुमार झा 'कमल' | 'अर्थ' : दो प्रसंगों में | 1984 | 4 | 49 |
| 86. | डॉ. बृजकिशोर प्रसाद | हुसर्ल का संवृति विज्ञान | 1984 | 4 | 55 |
| 87. | डॉ. ऊषा कुशवाहा | सांख्य एवं चरकसंहिता के परिप्रेक्ष्य में पुरुष | 1985 | 1 | 1 |
| 88. | डॉ. आलोक सक्सेना | अपरोक्ष अनुभव | 1985 | 1 | 9 |
| 89. | डॉ. राजेन्द्रकुमार सिंह | अनेकान्तवाद : एक मानवतावादी दृष्टिकोण | 1985 | 1 | 13 |
| 90. | मनस्विनी योगी | अनेकान्तवाद का दार्शनिक व व्यावहारिक स्वरूप | 1985 | 1 | 17 |
| 91. | डॉ. विनयानन्द दास | आत्मज्ञान : एक समीक्षात्मक विवेचन | 1985 | 1 | 23 |
| 92. | डॉ. कामेश्वर प्रसाद वर्मा | क्या ईश्वर सम्बन्धी कथन तथ्यात्मक कथन कहे जा सकते हैं ? | 1985 | 1 | 31 |
| 93. | डॉ. सुद्युम्नाचार्य | बौद्धों का क्षणभंगवाद तथा आधुनिक विज्ञान | 1985 | 1 | 37 |
| 94. | डॉ. कनक द्विवेदी | आधुनिकता- एक मूल्यात्मक अनुभव | 1985 | 1 | 53 |

| क्र. | नाम | लेख का शीर्षक | वर्ष | अंक | पृ.सं |
|------|--------------------------|---|------|-----|-------|
| 115. | डॉ. श्रीप्रकाश पाण्डेय | प्रभाकर दर्शन में 'आत्मा' का स्वरूप | 1986 | 1 | 13 |
| 116. | कमला कुमारी | बौद्ध एवं जैन धर्मों में अनीश्वरवादी विचार | 1986 | 1 | 21 |
| 117. | डॉ. उमेशचन्द्र दुबे | समकालीन भारतीय दर्शन में परम्परा एवं आधुनिकता | 1986 | 1 | 31 |
| 118. | डॉ. मोहनलाल शर्मा | ज्ञानेश्वरी की तत्त्वमीमांसा | 1986 | 1 | 47 |
| 119. | डॉ. शारदा चतुर्वेदी | शैव दर्शन की इच्छात्मिका शक्ति के परिप्रेक्ष्य में फ्रॉयड | 1986 | 1 | 55 |
| 120. | प्रो. नित्यानन्द मिश्र | शंकर और हुस्सर्ल | 1986 | 2 | 1 |
| 121. | प्रो. लक्ष्मी सक्सेना | कार्ल यास्पर्स: सीमा-रेखीय चिन्तन की अपूर्व दृष्टियां | 1986 | 2 | 9 |
| 122. | डॉ. ऊषा कुशवाहा | सांख्य की तत्त्वमीमांसा का विकासक्रम | 1986 | 2 | 49 |
| 123. | डॉ. बृजकिशोर पाण्डेय | आचार्य समन्तभद्र के मोक्ष विचार पर एक तुलनात्मक दृष्टि | 1986 | 2 | 59 |
| 124. | जे. फाइस | मासों-उर्सल के अनुसार तुलनात्मक दर्शन | 1986 | 3 | 1 |
| 125. | डॉ. गया चरण त्रिपाठी | ग्रन्थ एक : पन्थ अनेक श्रीमद्भगवद्गीता और उसकी विविध व्याख्याएं | 1986 | 3 | 13 |
| 126. | डॉ. वेदप्रकाश वर्मा | क्या ईश्वर विषयक चर्चा सार्थक और बोधगम्य है ? | 1986 | 3 | 21 |
| 127. | डॉ. उमेशचन्द्र दुबे | श्री अरविन्द-दर्शन के परिप्रेक्ष्य में सामाजिक विकास एवं परिवर्तन | 1986 | 3 | 29 |
| 127. | डॉ. नगेन्द्रनाथ उपाध्याय | एक तान्त्रिक बौद्ध रहस्यदर्शी अपभ्रंश पद और तद्गत सिद्धान्त | 1986 | 3 | 41 |

| क्र. | नाम | लेख का शीर्षक | वर्ष | अंक | पृ.सं |
|------|---|---|------|-----|-------|
| 146. | डॉ. जे.जे. शुक्ल | क्या सिख सम्प्रदाय हिन्दू नहीं है? | 1987 | 1 | 39 |
| 147. | डॉ. गोरखनाथ मिश्र | भारतीय और पाश्चात्य कट्टर यथार्थवाद | 1987 | 1 | 47 |
| 148. | डॉ. एन.के. देवराज | मेरा दर्शन: प्रस्थान बिन्दु | 1987 | 2 | 1 |
| 149. | डॉ. या. मसीह | धर्म समन्वय का स्वरूप और सिद्धान्त | 1987 | 2 | 11 |
| 150. | प्रो. रिपुसूदन प्र. श्रीवास्तव | धार्मिकता का सम्प्रत्यय: गीता से ब्रैथवेट तक | 1987 | 2 | 23 |
| 151. | डॉ. हरिशंकर प्रसाद | बौद्ध दर्शन में कारणता | 1987 | 2 | 31 |
| 152. | डॉ. डी.आर. भण्डारी | धार्मिक सहिष्णुता | 1987 | 2 | 43 |
| 153. | डॉ. प्रदीप कुमार खरे | गीता में वर्णित नैतिक मापदण्ड का मूल्यांकन : वर्तमान परिप्रेक्ष्य में | 1987 | 2 | 57 |
| 154. | डॉ. विद्यानिवास मिश्र | भारतीय काल-प्रत्यय: आधुनिक सन्दर्भ | 1987 | 3 | 1 |
| 155. | डॉ. सभाजीत मिश्र | हुसर्ल के दर्शन में विषयापेक्षी चेतना तथा अनुभवातीत आत्मा का सम्बन्ध | 1987 | 3 | 23 |
| 156. | डॉ. मदनमोहन त्रिवेदी, राकेश कुमार पाण्डेय | श्रीमद्भगवद्गीता के प्रकाश में भागवत-योग का स्वरूप | 1987 | 3 | 29 |
| 157. | डॉ. रमा पाण्डेय | भारतीय दार्शनिक वाङ्मय में शक्ति की अवधारणा | 1987 | 3 | 45 |
| 158. | डॉ. प्रियव्रत शुक्ल | विट्गोन्स्टाइन के अनुसार दर्शन का स्वरूप एवं कार्य | 1987 | 3 | 51 |
| 159. | डॉ. लक्ष्मीकान्त पाण्डेय | राधाकृष्णन् के दर्शन में विकासवाद की अवधारणा | 1987 | 3 | 57 |
| 160. | डॉ. सागरमल जैन | धर्म और दर्शन के क्षेत्र में हरिभद्र का अवदान | 1987 | 4 | 1 |
| 161. | प्रो. रमेश एम. दवे | शब्द-अर्थ मीमांसा | 1987 | 4 | 21 |

| क्र. | नाम | लेख का शीर्षक | वर्ष | अंक | पृ.सं |
|------|-----------------------------|---|------|-----|-------|
| 180. | डॉ. छाया राय | जैनागमकालीन समाज और कन्या | 1988 | 3 | 16 |
| 181. | डॉ. गायत्री सिन्हा | स्वामी विवेकानन्द की विश्वधर्म की अवधारणा | 1988 | 3 | 27 |
| 182. | डॉ. राज्यश्री अग्रवाल | हिन्दू सामाजिक व्यवस्था का दार्शनिक आधार | 1988 | 3 | 37 |
| 183. | डॉ. लक्ष्मीकान्त पाण्डेय | उपनिषदों में सदाचार की अवधारणा | 1988 | 3 | 49 |
| 184. | मलय कुमार महान्ति | मार्क्स का धर्म सम्बन्धी दृष्टिकोण | 1988 | 3 | 57 |
| 185. | डॉ. सुद्युम्नाचार्य | बौद्धसम्मत पदार्थों का स्वरूप तथा आधुनिक विज्ञान | 1989 | 1-4 | 1 |
| 186. | डॉ. विभारानी दूबे | काश्मीर शैव-दर्शन में भक्ति का स्वरूप | 1989 | 1-4 | 26 |
| 187. | डॉ. गीता अग्रवाल | ईश्वर साधक युक्तियों का समीक्षात्मक अध्ययन | 1989 | 1-4 | 36 |
| 188. | डॉ. विनोद शंकर | गणित के क्षेत्र में ज्ञान की संभावना | 1989 | 1-4 | 47 |
| 189. | डॉ. चन्द्रप्रकाश श्रीवास्तव | कार्ल यास्पर्स के चिंतन में विज्ञान एवं दर्शन का स्वरूप | 1989 | 1-4 | 52 |
| 190. | डॉ. भगवन्त सिंह | भारतीय दर्शन में शब्द और अर्थ का सम्बन्ध | 1989 | 1-4 | 61 |
| 191. | डॉ. उर्मिला चतुर्वेदी | ईश्वर और मानव | 1989 | 1-4 | 69 |
| 192. | डॉ. छाया राय | भारतीय नीतिमीमांसा का सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य | 1989 | 1-4 | 77 |
| 193. | डॉ. उमेश चन्द्र दूबे | श्री अरविन्द दर्शन का वैशिष्ट्य | 1989 | 1-4 | 90 |
| 194. | डॉ. एस.एन. पाण्डेय | स्वामी नारायण का धर्म- दर्शन तथा अक्षर-पुरुषोत्तम की अवधारणायें | 1989 | 1-4 | 103 |
| 195. | डॉ. डी.एन. तिवारी | अविद्या एवं विद्या | 1989 | 1-4 | 115 |
| 196. | रजनीश कुमार शुक्ल | शांकर वेदान्त- सत् मूल्य तादात्म्य | 1989 | 1-4 | 126 |

| क्र. | नाम | लेख का शीर्षक | वर्ष | अंक | पृ.सं |
|------|-----------------------|--|-------|-----|-------|
| 215. | कु. लता तिवारी | कृष्णचन्द्र भट्टाचार्य : वस्तु का दर्शन | 91-92 | 1-4 | 68 |
| 216. | डॉ. रंजना कुमारी झा | एम.एन. राय का मार्क्सवाद | 91-92 | 1-4 | 75 |
| 217. | डॉ. अम्बिकादत्त शर्मा | प्रमाणन्तर्भाव प्रकरण विमर्श | 91-92 | 1-4 | 88 |
| 218. | डॉ. रजनीश कु. शुक्ल | सौन्दर्यानुभूति: ज्ञान...विवेचन | 91-92 | 1-4 | 102 |
| 219. | डॉ. मुकुलराज मेहता | जैनाचार्यों के मत में प्रमाण | 91-92 | 1-4 | 109 |
| 220. | डॉ. विजयकान्त दुबे | बदलते सामाजिक प्रतिमानों.. | 91-92 | 1-4 | 113 |
| 221. | डॉ. सुचेता शुक्ला | स्वामी करपात्री सम्मत....विवेचन | 91-92 | 1-4 | 123 |
| 222. | चि.व. रावल | धर्म-सच्च मिमांसा | 1993 | 1-4 | 1 |
| 223. | प्रो. गौरांगचरण नायक | श्री स्वामीनारायण जी के दार्शनिक सिद्धान्तों का समीक्षात्मक अध्ययन | 1993 | 1-4 | 16 |
| 224. | डी. आर. भण्डारी | चिन्तन के आयाम : दर्शन एवं विज्ञान के संदर्भ में | 1993 | 1-4 | 28 |
| 225. | नरेश प्रसाद तिवारी | तत्त्वमीमांसा की प्रासंगिकता | 1993 | 1-4 | 38 |
| 226. | श्रीराम पाठक | दर्शन और पर्यावरण | 1993 | 1-4 | 57 |
| 227. | आलोक टण्डन | हिंसा से परे : कृष्णमूर्ति और गांधी | 1993 | 1-4 | 62 |
| 228. | शैलेश कुमार सिंह | एयर के अधिनैतिक सिद्धान्त का मूल्यांकन | 1993 | 1-4 | 71 |
| 229. | जे. फाईस | रहस्यवाद के क्षेत्र में तत्वमिमांसा अपर्याप्त | 1993 | 1-4 | 76 |
| 230. | जगतनारायण मिश्र | शंकर के अनुसार मोक्ष का स्वरूप | 1993 | 1-4 | 81 |
| 231. | चन्द्रशेखर | सूफी दर्शन के दस स्वयसिद्ध सिद्धान्त | 1993 | 1-4 | 89 |
| 232. | ललिता यादव | माध्यमिक शून्यवाद का मानदण्ड "रासायनिक क्रान्ति" | 1993 | 1-4 | 94 |
| 233. | डॉ. रामलाल सिंह | श्री स्वामी नारायण सेश्वर वेदान्त एवं प्रार्थना की ईश्वरवादी अवधारणा | 1994 | 1-4 | 1 |
| 234. | डॉ. मधुसूदन प्रसाद | आधुनिक युग में देव धर्म की उपयोगिता | 1994 | 1-4 | 12 |

| क्र. | नाम | लेख का शीर्षक | वर्ष | अंक | पृ.सं |
|------|--------------------------|---|------|-----|-------|
| 252. | ज्योति स्वरूप दुबे | दर्शन में दृश्य और अदृश्य की समस्या | 1994 | 1-4 | 24 |
| 253. | रोहतास कुमार सुथार | वेदान्त और कबीर का दर्शन | 1994 | 1-4 | 28 |
| 254. | डॉ. देवेन्द्र नाथ तिवारी | मुख्य, गौण एवं नान्तरिक अर्थ का निर्णय | 1994 | 1-4 | 33 |
| 255. | डॉ. जे. फाइस | डॉ. राधाकृष्णन का धर्म दर्शन— कुछ प्रश्न | 1994 | 1-4 | 42 |
| 256. | डॉ. नीलिमा सिन्हा | क्या तर्क प्रमा अथवा प्रमाण है? | 1994 | 1-4 | 50 |
| 257. | डॉ. उर्मिला चतुर्वेदी | भारतीय दर्शन : सिद्धांत और साधना | 1994 | 1-4 | 56 |
| 258. | डॉ. (कु.) गायत्री शर्मा | ईश्वर का स्वरूप | 1994 | 1-4 | 62 |
| 259. | डॉ. भगवन्त सिंह | ज्ञान की स्वयं-प्रकाशिता | 1994 | 1-4 | 64 |
| 260. | कमलेश कुमार | विशिष्टाद्वैत की भक्ति | 1994 | 1-4 | 68 |
| 261. | प्रो. अशोक कुमार वर्मा | तुलनात्मक दर्शन : उद्देश्य एवं उपलब्धियां | 1995 | 1-4 | 1 |
| 262. | प्रो. डी.एन. द्विवेदी | अन्तर्धर्मात्मक संवाद : सम्भावनायें | 1995 | 1-4 | 6 |
| 263. | डॉ. मदन मोहन त्रिवेदी | भारतीय तर्कशास्त्र का स्वरूप | 1995 | 1-4 | 10 |
| 264. | डॉ. (श्रीमती) शोभा निगम | देवात्मा के दर्शन में मानव जीवन का लक्ष्य | 1995 | 1-4 | 15 |
| 265. | डॉ. गोरखनाथ मिश्र | अद्वैत, द्वैत और अक्षर— विशिष्टाद्वैत वेदान्त : सत्ताशास्त्रीय संरचना | 1995 | 1-4 | 23 |
| 266. | डॉ. शशिभूषण प्र. सिन्हा | भारतीय दर्शन की केन्द्रीय समस्या | 1995 | 1-4 | 25 |
| 267. | डॉ. श्रीप्रकाश दुबे | भाषा, साहित्य एवं दर्शन | 1995 | 1-4 | 32 |
| 268. | डॉ. शशिप्रभा कुमार | न्याय वैशेषिक दर्शन में सम्बन्ध की अवधारणा | 1995 | 1-4 | 38 |
| 269. | डॉ. सोमनाथ नेने | मीमांसा दर्शन में सम्बन्ध की अवधारणा | 1995 | 1-4 | 52 |
| 270. | डॉ. ललिता देवी यादव | सम्बन्ध की अवधारणा | 1995 | 1-4 | 61 |
| 271. | डॉ. गीता मेहता | स्वदेशी | 1995 | 1-4 | 67 |

| क्र. | नाम | लेख का शीर्षक | वर्ष | अंक | पृ.सं |
|------|--------------------------|--|------|-----|-------|
| 288. | डॉ. आलोक टण्डन | वर्तमान सांस्कृतिक संकट | 1996 | 1-4 | 56 |
| 289. | डॉ. शैलेश कुमार सिंह | सांस्कृतिक संकट | 1996 | 1-4 | 65 |
| 290. | डॉ. (श्रीमती) प्रियम्बदा | व्यंजना वृत्ति | 1996 | 1-4 | 70 |
| 291. | डॉ. श्रीप्रकाश दुबे | विनोबा की वैश्विक दृष्टि | 1996 | 1-4 | 82 |
| 292. | प्रो. के.पी. वर्मा | धार्मिक भाषा की सार्थकता के सन्दर्भ में विश्लेषणपरक चिन्तन का मत | 1996 | 1-4 | 89 |
| 293. | कालीचरण पांडेय | विट्गोन्स्टाइन का धार्मिक मत : एक विश्लेषण | 1996 | 1-4 | 93 |
| 294. | डॉ. किरण कुमारी | धर्म और शांति का आधार—मानवतावाद | 1996 | 1-4 | 99 |
| 295. | अणिमा कुमारी | रामकृष्ण परमहंस का धर्म—दर्शन और उसकी आधुनिक युग में प्रासंगिकता | 1996 | 1-4 | 103 |
| 296. | डॉ. नागेन्द्र तिवारी | मीमांसा एवं न्याय दर्शन में शब्द प्रमाण | 1996 | 1-4 | 110 |
| 297. | राजदीप सिंह | शंकराचार्य के दर्शन में योग की अवधारणा | 1996 | 1-4 | 115 |
| 298. | नागेन्द्रमणि 'मंजुल' | भारतीय दर्शन परम्परा में गांधी | 1996 | 1-4 | 129 |
| 299. | डॉ. अमलधारी सिंह | वैदिक धर्म का स्वरूप | 1997 | 1-4 | 1 |
| 300. | डॉ. प्रियव्रत शुक्ल | श्रुत्यर्थ विवेचन एवं तत्त्व मीमांसा के नवीन आयाम | 1997 | 1-4 | 17 |
| 301. | डॉ. जे. फाइस | धर्म दर्शन की भूमिका | 1997 | 1-4 | 28 |
| 302. | डॉ. वेदवती वैदिक | श्री स्वामी नारायण सेश्वर वेदान्त में अक्षर ब्रह्म | 1997 | 1-4 | 41 |
| 303. | डॉ. विश्राम प्रसाद | प्रतीत्य समुत्पाद के विभिन्न अर्थ | 1997 | 1-4 | 52 |
| 304. | कमलेश कुमार | बौद्ध दर्शन के परिप्रेक्ष्य में कारणता विचार | 1997 | 1-4 | 60 |
| 305. | डॉ. आभास कुमार | बौद्ध दर्शन के परिप्रेक्ष्य में परिवर्तन का सम्प्रत्यय | 1997 | 1-4 | 67 |

| क्र. | नाम | लेख का शीर्षक | वर्ष | अंक | पृ.सं |
|------|-----------------------------|---|------|-----|-------|
| 322. | डॉ. महेश सिंह | “मानवाधिकार” से जुड़े कतिपय प्रश्न | 1998 | 1-2 | 85 |
| 323. | डॉ. के.एस. द्विवेदी | मानवाधिकार | 1998 | 1-2 | 94 |
| 324. | डॉ. ललिता देवी यादव | नागरिक संहिता | 1998 | 1-2 | 107 |
| 325. | डॉ. भगवन्त सिंह | समान नागरिक संहिता | 1998 | 1-2 | 114 |
| 326. | डॉ. श्यामल किशोर | नागरिक संहिता | 1998 | 1-2 | 117 |
| 327. | प्रो. ई.आर. मठवाले | नागरिक संहिता | 1998 | 1-2 | 123 |
| 328. | डॉ. अरुण सिंह | वैज्ञानिक दृष्टि- प्रकृति एवं सीमा | 1998 | 1-2 | 132 |
| 329. | डॉ. शुक्ला सिन्हा | प्रत्यक्षमूलक ज्ञान तथा विश्लेषण | 1998 | 3-4 | 1 |
| 330. | डॉ. वेदप्रकाश गौड़ | महात्मा गांधी का धर्म दर्शन | 1998 | 3-4 | 10 |
| 331. | डॉ. हरिनारायण पांडेय | भारतीय दर्शन में तत्त्व-मीमांसा का स्थान एवं महत्त्व | 1998 | 3-4 | 16 |
| 332. | डॉ. मदनमोहन त्रिवेदी | भारतीय दर्शन में अनुमान एवं व्याप्ति | 1998 | 3-4 | 25 |
| 333. | डॉ. गोपाल कृष्ण सिन्हा | क्या दर्शन भाषाई विश्लेषण है? | 1998 | 3-4 | 30 |
| 334. | डॉ. वेदवती वैदिक | उपनिषदों की व्याख्या-पद्धति | 1998 | 3-4 | 41 |
| 335. | डॉ. सोमनाथ नेने | भाट्ट मीमांसा में प्रमाण लक्षण-विमर्श | 1998 | 3-4 | 49 |
| 336. | डॉ. गीतारानी अग्रवाल | प्रकृतिवाद : दर्शन एवं शिक्षा-दर्शन के सन्दर्भ में | 1998 | 3-4 | 58 |
| 337. | डॉ. राधेश्यामधर द्विवेदी | भारतीय संस्कृति में धार्मिक सामाजिक परिवर्तन कैसे सम्भव होगा? | 1998 | 3-4 | 65 |
| 338. | डॉ. राजेन्द्र प्रसाद पांडेय | भारतीय नीति दर्शन के मूलाधार | 1998 | 3-4 | 84 |
| 339. | डॉ. शिवनारायण जोशी | ईश्वर केन्द्रित धर्म में स्वतन्त्रता की संभावना | 1999 | 1-2 | 1 |
| 340. | डॉ. शशिप्रभा कुमार | तत्त्व मीमांसा के वैदिक आधार | 1999 | 1-2 | 14 |
| 341. | प्रो. श्यामनारायण चौधरी | वैदिक दर्शन : एक अनुशीलन | 1999 | 1-2 | 25 |
| 342. | डॉ. कुमुदनाथ झा | सांख्य ज्ञान मीमांसा की मूलभूत मान्यतायें | 1999 | 1-2 | 36 |

| क्र. | नाम | लेख का शीर्षक | वर्ष | अंक | पृ.सं |
|------|--------------------------|--|------|-----|-------|
| 360. | प्रो. ई. आर. मठवाले | स्वराज्य की अवधारणा : विधि व आयाम | 1999 | 3-4 | 42 |
| 361. | डॉ. उर्मिला चतुर्वेदी | आचार्य विनोवा भावे और साम्य योग | 1999 | 3-4 | 47 |
| 362. | नीति गुप्ता | जैविक सिद्धान्त : जीव और जीवलीला | 1999 | 3-4 | 57 |
| 363. | सुनील कुमार सिंह | हिन्दू धर्म में आयुर्वेद की चिकित्सा-पद्धति : एक जैव आचार शास्त्रीय अध्ययन | 1999 | 3-4 | 61 |
| 364. | गायत्री शर्मा | डेकार्ट का दर्शन-ईश्वर विवेचन | 1999 | 3-4 | 67 |
| 365. | अणिमा कुमारी | महात्मा गांधी का तत्वमीमांसीय विचार | 1999 | 3-4 | 83 |
| 366. | डॉ. वेदप्रकाश वर्मा | मनुष्य के चरित्र-निर्माण में देवात्मा-दर्शन का योगदान | 1999 | 3-4 | 88 |
| 367. | डॉ. विनोद कुमारी | उत्तराधुनिक राजनैतिक चिन्तन की पाश्चात्य दृष्टि: कुछ प्रमुख प्रश्न | 1999 | 3-4 | 101 |
| 368. | राजकुमारी सिन्हा | विज्ञान और धर्म का द्वंद्व | 1999 | 3-4 | 109 |
| 369. | डॉ. मुरली मनोहर पाठक | हिरण्यगर्भ का वैदिक स्वरूप | 1999 | 3-4 | 118 |
| 370. | डॉ. दीनानाथ शुक्ल | कृष्णचन्द्र भट्टाचार्य के अनुसार निरपेक्ष की अवधारणा | 1999 | 3-4 | 125 |
| 371. | डॉ. विजयश्री | सर्जनात्मक स्वराज्य | 1999 | 3-4 | 130 |
| 372. | डॉ. विजय कान्त दुबे | मानव स्वातंत्र्य : शंकर एवं सार्त्र | 1999 | 3-4 | 138 |
| 373. | डॉ. प्रेमलता सिन्हा | गीता में स्थितप्रज्ञता | 1999 | 3-4 | 147 |
| 374. | डॉ. शशिभूषण प्र. सिन्हा | आधुनिक युग में दर्शन की भूमिका | 1999 | 3-4 | 155 |
| 375. | डॉ. शैल कुमारी | भारतीय दर्शन और भारतीय संगीत का अन्तःसम्बन्ध | 1999 | 3-4 | 163 |
| 376. | प्रो. रमेश चन्द्र सिन्हा | ऐतिहासिक प्रक्रिया एवं सामाजिक परिवर्तन | 2000 | 1-2 | 1 |

| क्र. | नाम | लेख का शीर्षक | वर्ष | अंक | पृ.सं |
|------|---------------------------|--|------|-----|-------|
| 396. | डॉ. विनय कुमार सिंह | विश्व धर्म के आयाम— सैद्धान्तिक तथा व्यावहारिक पक्ष | 2000 | 1-2 | 154 |
| 397. | डॉ. राजकुमारी सिन्हा | नारी सहभागिता: दायित्व एवं चुनौतियां | 2000 | 3-4 | 1 |
| 398. | डॉ. दीनानाथ शुक्ल | प्राचीन न्याय में निग्रह—स्थान: स्वरूप एवं प्रकार | 2000 | 3-4 | 10 |
| 399. | डॉ. अविनाश कु. श्रीवास्तव | बौद्ध दर्शन की अभियोजनशीलता | 2000 | 3-4 | 16 |
| 400. | डॉ. मुरली मनोहर पाठक | ऋग्वेद में आचार—मीमांसा | 2000 | 3-4 | 21 |
| 401. | डॉ. संजीव कुमार | बौद्ध दर्शन में अर्हत | 2000 | 3-4 | 27 |
| 402. | डॉ. आर.के. देसवाल | बौद्ध दर्शन में दुःख की समस्या एवं उसका समाधान | 2000 | 3-4 | 31 |
| 403. | डॉ. सोमनाथ नेने | प्रभाकर मीमांसा में सैद्धान्तिक समन्वय | 2000 | 3-4 | 36 |
| 404. | डॉ. जय सिंह | चार्वाक के अनुसार आत्मा का खण्डन | 2000 | 3-4 | 43 |
| 405. | डॉ. राम किशोर सिंह | जैन एवं वेदान्त दर्शनों में कर्म—विपाक की अवधारणा | 2000 | 3-4 | 49 |
| 406. | डॉ. डी.आर. भन्डारी | धर्म, सम्प्रदाय एवं धर्मनिरपेक्षता | 2000 | 3-4 | 52 |
| 407. | आनन्द प्रकाश त्रिपाठी | जैन दर्शन में इन्द्रिय स्वरूप | 2000 | 3-4 | 63 |
| 408. | डॉ. त्रिलोक चंद | वर्तमान परिप्रेक्ष्य में वर्ण— व्यवस्था की कुछ विशेषतायें | 2000 | 3-4 | 69 |
| 409. | माधवी कवि | नारी सहभागिता— चुनौती एवं दायित्व | 2000 | 3-4 | 72 |
| 410. | एम.एन. सिन्हा | भगवद्गीता में स्वधर्म विचार | 2000 | 3-4 | 78 |
| 411. | डॉ. एस.पी. दुबे | भारतीय दर्शन के पांच दशक | 2000 | 3-4 | 83 |
| 412. | डॉ. के.सी. पाण्डेय | विट्गोन्स्टाइन का 'अन्धविश्वास सम्बन्धी' विचार | 2000 | 3-4 | 90 |
| 413. | डॉ. सोमनाथ नेने | "पूर्वमीमांसा में अपूर्वता के त्रिविध आयाम" | 2001 | 1 | 1 |
| 414. | डॉ. कमलेश कुमार | द्रव्य का परिणामी— नित्य स्वरूप | 2001 | 1 | 11 |

| क्र. | नाम | लेख का शीर्षक | वर्ष | अंक | पृ.सं |
|------|-------------------------|--|------|-----|-------|
| 430. | डॉ. राजकुमारी सिन्हा | धार्मिक विश्वास की समस्या – एक चिंतन | 2001 | 2 | 25 |
| 431. | डॉ. श्रीकान्त मिश्र | सांख्य दर्शन एवं शैव- सिद्धान्त दर्शन | 2001 | 2 | 30 |
| 432. | डॉ. भरत कुमार तिवारी | संभोग से समाधि | 2001 | 2 | 39 |
| 433. | डॉ. देवेन्द्रनाथ तिवारी | भारतीय भाषा-चिंतन में विश्लेषण एवं अनुवाद की समस्या | 2001 | 2 | 44 |
| 434. | डॉ. आर.के सिंह | तर्क एवं ज्ञान मीमांसा | 2001 | 2 | 55 |
| 435. | श्री कालीचरण पाण्डेय | उत्तर-आधुनिकतावाद | 2001 | 2 | 72 |
| 436. | श्री ज्योति स्वरूप दुबे | आचार्य शंकर का रहस्यवाद | 2001 | 2 | 82 |
| 437. | डॉ. डी.आर. भण्डारी | कर्तव्य-कर्मनिष्ठा ही योगसिद्धि- गीता-नीति विश्लेषण | 2001 | 2 | 87 |
| 438. | प्रो. श्रीप्रकाश दुबे | दर्शनशास्त्र में पत्रकारिता – भारतीय एवं यूनानी परिप्रेक्ष्य में | 2001 | 2 | 95 |
| 439. | डॉ. रीता कुमारी शर्मा | राधाकृष्णन् का धर्म-समन्वय दर्शन | 2001 | 2 | 101 |
| 440. | डॉ. अरुण कुमार सिंह | विज्ञानवाद (योगाचार) एवम् प्रत्यभिज्ञा दर्शन के 'चित्' का तुलनात्मक विवेचन | 2001 | 2 | 108 |
| 441. | कृ. मीना मिश्रा | क्रीडा एवं योग का शरीर पर बाह्य एवं आन्तरिक प्रभाव | 2001 | 2 | 121 |
| 442. | डॉ. आनन्द मिश्र | भारतीय दर्शन में प्रकाशवाद | 2001 | 3 | 1 |
| 443. | नीलिमा सिन्हा | धर्मकीर्ति के दर्शन में प्रत्यक्ष का स्वरूप | 2001 | 3 | 14 |
| 444. | डॉ. महेश सिंह | धर्म-परिवर्तन का स्वरूप और संभावना | 2001 | 3 | 21 |
| 445. | सत्यदेव मिश्र | सांख्य दर्शन का निरीश्वरवाद | 2001 | 3 | 30 |
| 446. | प्रमोद कुमार सिंह | आचार्य नागसेन एवं मिलिंदपन्ह | 2001 | 3 | 35 |
| 447. | डॉ. राजेश्वर सिंह | माठरसम्मत विवेकख्याति-विमर्श | 2001 | 3 | 39 |

| क्र. | नाम | लेख का शीर्षक | वर्ष | अंक | पृ.सं |
|------|---------------------------|--|------|-----|-------|
| 467. | डॉ. जयप्रकाश ना. त्रिपाठी | विभिन्नदर्शनाभिमत मोक्षस्वरूप | 2001 | 4 | 73 |
| 468. | कुमार अविनाश प्र. सिन्हा | क्या नैतिकता धर्म को अधिभूत करती है ? | 2002 | 1 | 5 |
| 469. | डॉ. जटाशंकर | धर्मस्य तत्त्वं निहितं गुहायाम् | 2002 | 1 | 11 |
| 470. | डॉ. राजकुमारी सिन्हा | तुलनात्मक धर्म एकादमी : | 2002 | 1 | 17 |
| 471. | डॉ. विजय कान्त दुबे | उद्देश्य एवं महत्त्व बीसवीं सदी के दर्शन में तुलनात्मक दर्शन की सार्थकता | 2002 | 1 | 23 |
| 472. | डॉ. अविनाश कु. श्रीवास्तव | इक्कसवीं शताब्दी में भारतीय दर्शन : प्रवृत्तियां और भविष्य | 2002 | 1 | 32 |
| 473. | डॉ. सुधा चौधरी | आतंकवाद : पूँजीवादी दर्शन के अन्तर्विरोध की विकृति | 2002 | 1 | 41 |
| 474. | प्रो. डी.आर. भण्डारी | अणुव्रत-दर्शन विश्लेषण | 2002 | 1 | 49 |
| 475. | डॉ. राजेश्वर सिंह | युक्तिदीपिका का वैशिष्ट्य | 2002 | 1 | 56 |
| 476. | डॉ. शैल कुमारी | भारतीय दार्शनिक परम्परा में ज्ञानमीमांसा के कुंजी-स्वर | 2002 | 1 | 63 |
| 477. | हेमन्त नामदेव | 'अर्थ' की अवधारणा और भारतीय दृष्टिकोण | 2002 | 1 | 74 |
| 478. | डॉ. नागेन्द्र तिवारी | मीमांसा दर्शन में अर्थ-घटन के सिद्धान्त | 2002 | 1 | 81 |
| 479. | डॉ. प्रियंवदा गौड़ | —” — | 2002 | 1 | 87 |
| 480. | डॉ. (सुश्री) निर्मल गर्ग | धर्म-तत्त्व चिन्तन : प्रमुख पहलू | 2002 | 1 | 95 |
| 481. | डॉ. अशोक कुमार सिंह | युक्तियों की वैधता-अवैधता और सत्यता-सारणी की विधि | 2002 | 1 | 106 |
| 482. | पूर्णन्दु शेखर | मानव-व्यवहार विज्ञान के रूप में | 2002 | 1 | 118 |
| 483. | डॉ. रजनीश कु. शुक्ल | वृत्ति, प्रमा तथा ज्ञान..... | 2002 | 2 | 1 |
| 484. | शत्रुघ्न चतुर्वेदी | नागार्जुन का ज्ञानमीमांसीय संदेहवाद | 2002 | 2 | 9 |
| 485. | डॉ. सोमनाथ नेने | भाट्टमीमांसा में प्रत्यक्ष की अवधारणा | 2002 | 2 | 17 |

| क्र. | नाम | लेख का शीर्षक | वर्ष | अंक | पृ.सं |
|------|-------------------------|--|------|-----|-------|
| 503. | डॉ. प्रभास कुमार | आतंकवाद और परिवर्तन | 2002 | 3 | 70 |
| 504. | प्रो. डी.आर. भण्डारी | मानव जीवन एवं पर्यावरण | 2002 | 3 | 80 |
| 505. | श्री रामस्वरूप चौधरी | गुरु तत्त्व दर्शन | 2002 | 3 | 84 |
| 506. | अल्पना जैन | द्रव्य की अवधारणा एवं वस्तु-स्वातंत्र्य(जैन दर्शन के परिप्रेक्ष्य में) | 2002 | 3 | 88 |
| 507. | डॉ. ललिता संचेती | जैन दर्शन का अनासक्तिभावः अपरिग्रह सूत्र | 2002 | 3 | 99 |
| 508. | डॉ. सरोज कुमार वर्मा | आज की समस्यायें और ओशो का शिक्षा-दर्शन | 2002 | 3 | 106 |
| 509. | डॉ. अशोक कृ. सिंह | अस्तित्ववादी स्वतंत्रता | 2002 | 3 | 114 |
| 510. | डॉ. अरविन्द विक्रम सिंह | प्लेटो के न्याय की संकल्पना और भारतीय दर्शन में धर्म | 2002 | 3 | 122 |
| 511. | प्रो. एच.एन. मिश्र | नागार्जुन की शून्यता की अवधारणा एवं विश्वशान्ति | 2002 | 4 | 1 |
| 512. | डॉ. प्रदीप कुमार खरे | मधुसूदन सरस्वती के अनुसार भक्ति का स्वरूप | 2002 | 4 | 15 |
| 513. | डॉ. डी.आर. भण्डारी | भगवान महावीर का अनेकान्तवाद | 2002 | 4 | 23 |
| 514. | चन्द्रशेखर तिवारी | जैन दर्शन में पर्याय की अवधारणा | 2002 | 4 | 29 |
| 515. | डॉ. अम्बिकादत्त शर्मा | तुलनात्मक दर्शन: विमर्शात्मक चेतना में पुनर्विमर्श | 2002 | 4 | 35 |
| 516. | डॉ. विजयलक्ष्मी गुप्ता | मनु के राजधर्म की वर्तमान में प्रासंगिता | 2002 | 4 | 43 |
| 517. | डॉ. भगवंत सिंह | व्यावसायिक नैतिकता की संभावनायें | 2002 | 4 | 49 |
| 518. | डॉ. हेमलता श्रीवास्तव | भारतीय दर्शन में अपोहवाद | 2002 | 4 | 53 |
| 519. | डॉ. आनन्द मिश्र | हाइडेगरकृत तत्त्वमीमांसा की समीक्षा | 2002 | 4 | 57 |

| क्र. | नाम | लेख का शीर्षक | वर्ष | अंक | पृ.सं |
|------|-------------------------|--|------|-----|-------|
| 540. | राजेश कुमार चौरसिया | स्वतन्त्रता की अवधारणा | 2003 | 1 | 85 |
| 541. | डॉ. विभा कुमारी सिंह | विभिन्न चिन्तन परम्परा में धर्म की अवधारणा एवं धर्म निरपेक्षता की आवश्यकता | 2003 | 1 | 97 |
| 542. | डॉ. अवधेश कु. सिंह | चार्वाक कृत ईश्वर खण्डन का समीक्षात्मक अध्ययन | 2003 | 1 | 105 |
| 543. | डॉ. अरविन्द विक्रम सिंह | विरोधाभासों की दार्शनिक चिन्तन में भूमिका | 2003 | 2 | 1 |
| 544. | डॉ. मुरली मनोहर पाठक | वैदिक संहिताओं में प्रतिपादित नैतिक मूल्य | 2003 | 2 | 7 |
| 545. | डॉ. प्रभास कुमार | अनुप्रयुक्त दर्शन | 2003 | 2 | 21 |
| 546. | डॉ. बी.एन. ओझा | भारतीय दर्शन में नैतिकता की अवधारणा | 2003 | 2 | 29 |
| 547. | डॉ. आलोक टण्डन | आधुनिकीकरण और स्व-अस्मिता : भारतीय सन्दर्भ में | 2003 | 2 | 37 |
| 548. | डॉ. अखिलेश्वर प्र. दुबे | स्वामी नारायण एवं रामानुज के अनुसार भक्ति का स्वरूप एवं महत्व | 2003 | 2 | 46 |
| 549. | डॉ. मुकेश चन्द्र डिमरी | वैशेषिक सूत्र एवं चरक संहिता-सुश्रुत संहिता का व्यावहारिक अनुशीलन | 2003 | 2 | 53 |
| 550. | डॉ. गौरी चट्टोपाध्याय | अनुकरणीय दर्शन की सीमा | 2003 | 2 | 61 |
| 551. | डॉ. राजनन्दन यादव | अनुप्रयुक्त दर्शन भारतीय दर्शन के परिप्रेक्ष्य में | 2003 | 2 | 67 |
| 552. | डॉ. गीतेश्वरी वर्मा | पाश्चात्य विश्लेषणात्मक दर्शन | 2003 | 2 | 77 |
| 553. | डॉ. मृत्युंजय कुमार | पाश्चात्य विश्लेषणात्मक दर्शन (विट्गेन्स्टाइन, एयर, राइल एवं ऑस्टिन के संदर्भ में) | 2003 | 2 | 89 |
| 554. | डॉ. आशा बिंजोला | श्रीरामचरितमानस में भक्ति की अवधारणा | 2003 | 2 | 105 |

| क्र. | नाम | लेख का शीर्षक | वर्ष | अंक | पृ.सं |
|------|-----------------------|--|------|-----|-------|
| 573. | शत्रुघ्न चतुर्वेदी | दार्शनिक चेतना की द्वन्द्वात्मक प्रकृति | 2003 | 4 | 19 |
| 574. | डॉ. देवव्रत चौबे | न्याय-वैशेषिक दर्शन में मन का स्वरूप | 2003 | 4 | 29 |
| 575. | विजय सिंह भाटी | मानवतावाद : एक समीक्षा | 2003 | 4 | 35 |
| 576. | सुशिम दुबे | कौटिल्य अर्थशास्त्र का मूल्यपरक | 2003 | 4 | 39 |
| 577. | डॉ. प्रवीण कु. शुक्ल | हिन्दू धर्मशास्त्र में स्वधर्म और... | 2003 | 4 | 45 |
| 578. | बबलू वेदालंकार | भारतीय दर्शन में 'मोक्ष' | 2003 | 4 | 55 |
| 579. | दिलीप कु. एस. चारण | उपनिषद् में गुरुतत्त्वचिंतन | 2003 | 4 | 59 |
| 580. | डॉ. शंकरदयाल द्विवेदी | शाब्दबोध का स्वरूप | 2003 | 4 | 69 |
| 581. | डॉ. नंदकिशोर पाण्डेय | विवेकानन्द के अनुसार ब्रह्म का स्वरूप | 2003 | 4 | 83 |
| 582. | डॉ. विभा मुकेश | वैशेषिक दर्शन में अनुमान प्रमाण | 2003 | 4 | 89 |
| 583. | डॉ. आर.के सिंह | मानवेन्द्रनाथ राय के दर्शन में नैतिक मूल्य | 2004 | 1 | 1 |
| 584. | कालीचरण पाण्डेय | विट्गोन्स्टाइन और धार्मिक अभिव्यक्ति | 2004 | 1 | 9 |
| 585. | डॉ. अशोक कु. पाण्डेय | संगम दर्शन के आलोक में आहार्य ज्ञान की अवधारणा | 2004 | 1 | 17 |
| 586. | विजेन्द्र सिंह भाटी | मार्क्सवाद द्वारा विरक्ति का उदय | 2004 | 1 | 29 |
| 587. | डॉ. दीपनारायण यादव | पियाजे के जननिक ज्ञान- मीमांसा संबंधी विचार | 2004 | 1 | 33 |
| 588. | डॉ. मृत्युंजय कुमार | बर्गसाँ के दर्शन में नैतिकता एवं धर्म की अवधारणा | 2004 | 1 | 47 |
| 589. | डॉ. आलोक टण्डन | देवात्मा का नीतिदर्शन | 2004 | 1 | 55 |
| 590. | डॉ. सुनन्दा सिंह | सन्त मेहरी दास की रचनाओं में दार्शनिकता के तत्त्व | 2004 | 1 | 63 |
| 591. | डॉ. विजयकान्त दुबे | शेखर वेदान्त में भक्ति | 2004 | 1 | 71 |
| 592. | डॉ. श्रीकान्त पाण्डेय | मोक्ष सन्दर्भ एवं व्याकरण दर्शन | 2004 | 1 | 79 |
| 593. | डॉ. रजनीश कु. शुक्ल | इन्द्रिय प्राप्यकारित्वाप्राप्यकारित्व | 2004 | 1 | 87 |

| क्र. | नाम | लेख का शीर्षक | वर्ष | अंक | पृ.सं |
|------|-------------------------|--|------|-----|-------|
| 621. | डॉ. रमा पाण्डेय | गौड़ीय सम्प्रदाय में श्रीराधा तत्व की अवधारणा | 2004 | 3 | 59 |
| 622. | अनिल कुमार सोनकर | आवश्यक सूत्र प्रतिपादित आचार मीमांसा | 2004 | 3 | 71 |
| 623. | डॉ. महेश्वर मिश्र | उत्तर आधुनिक संदर्भ में अपोहवाद | 2004 | 3 | 85 |
| 624. | डॉ. गायत्री शर्मा | अमरत्व का विचार | 2004 | 3 | 91 |
| 625. | डॉ. शिवदीपक शर्मा | कौल मार्ग: दार्शनिक अवधारणा | 2004 | 3 | 103 |
| 626. | मनीष सिंह भाटी | सार्त्र का अनीश्वरवाद | 2004 | 3 | 111 |
| 627. | कृ. नीवा भण्डारी | पुरुषार्थ | 2004 | 3 | 115 |
| 628. | डॉ. देवकीनन्दन द्विवेदी | चेतना की भौतिकवादी व्याख्याएँ | 2004 | 4 | 1 |
| 629. | डॉ. बी.एन. ओझा | भारतीय समाज में हिन्दू धर्म एवं वर्तमान संदर्भ में इसकी प्रासंगिकता | 2004 | 4 | 23 |
| 330. | डॉ. उत्तम कृ. शुक्ल | रघुनाथ शिरोमणि की द्रव्यविषयक अवधारणा | 2004 | 4 | 37 |
| 630. | डॉ. नीलिमा सिन्हा | एकावयवी न्याय की बौद्ध परंपरा | 2004 | 4 | 41 |
| 631. | प्रो. डी.आर. भण्डारी | कर्मयोग और संन्यास | 2004 | 4 | 61 |
| 632. | अम्बिकादत्त शर्मा | क्षणिकवाद और मिथ्याकारवाद का तत्त्वमीमांसीय समायोजन | 2004 | 4 | 69 |
| 633. | डॉ. नागेन्द्र तिवारी | मीमांसा दर्शन में शब्द नित्यत्व विचार | 2004 | 4 | 77 |
| 634. | डॉ. शीतल जैन | जीवन दर्शन और गुरुतत्त्व | 2004 | 4 | 81 |
| 635. | गोस्वामी श्याममनोहर | श्रीस्वामिनारायण मतीय वेदान्तसिद्धान्त और भक्ति-साधना की विकसन प्रक्रिया | 2004 | 4 | 87 |
| 636. | दिलीप कृ. एस. चारण | बाह्यार्थवाद की दृष्टि से इन्द्रियप्राप्यकारित्व | 2004 | 4 | 105 |
| 637. | डॉ. मुकेश चन्द्र डिमरी | चरकसंहिता-सुश्रुतसंहिता के अनुमान प्रमाण | 2004 | 4 | 117 |
| 638. | डॉ. राजेश्वर प्र. यादव | भारतीय दर्शन में ईश्वर की | 2005 | 1-4 | 31 |

| क्र. | नाम | लेख का शीर्षक | वर्ष | अंक | पृ.सं |
|------|----------------------------|---|------|-----|-------|
| 660. | डॉ. शिव भानु सिंह | न्याय दर्शन में निर्विकल्प और सविकल्प प्रत्यक्ष | 2005 | 1-4 | 209 |
| 661. | डॉ. साधना वोरा | इक्कीसवीं सदी में गांधी विचार की प्रासंगिकता | 2005 | 1-4 | 215 |
| 662. | डॉ. ज्ञानंजय द्विवेदी | भारतीय दर्शन का भावी स्वरूप | 2005 | 1-4 | 219 |
| 663. | डॉ. आर.के. सिंह | शब्दार्थ/वाक्यार्थबोध | 2005 | 1-4 | 223 |
| 664. | डॉ. धर्म जंग | भारतीय चिन्तन दृष्टि में पारिस्थितिकी चेतना के तत्व | 2005 | 1-4 | 231 |
| 665. | डॉ. विपिन कु. पाण्डेय | लक्षण सिद्धान्त | 2005 | 1-4 | 239 |
| 666. | प्रो. आशा मुखर्जी | काण्ट एवं के.सी. भट्टाचार्य | 2005 | 1-4 | 245 |
| 667. | नवीन कुमार | धर्म के लिए ईश्वर की अनिवार्यता | 2005 | 1-4 | 255 |
| 668. | सुश्री दीपा पांडे | भारतीय दर्शन का लोकोपयोगी स्वरूप, नैतिकता और युगबोध | 2005 | 1-4 | 267 |
| 669. | प्रो. गायत्री सिन्हा | रवीन्द्रनाथ टैगोर का कला दर्शन | 2005 | 1-4 | 273 |
| 670. | डॉ. त्रिलोक चन्द | महात्मा गांधी और अहिंसा | 2005 | 1-4 | 285 |
| 671. | प्रो. मृत्युंजय ना. सिन्हा | संस्कृति एवं सांस्कृतिक प्रगति | 2005 | 1-4 | 291 |
| 672. | डॉ. राजीव रंजन सिंह | रस-ब्रह्म | 2005 | 1-4 | 297 |
| 673. | डॉ. गीता मेहता | महात्मा गांधी के मतानुसार जीवन के नैतिक मूल्य | 2005 | 1-4 | 301 |
| 674. | डॉ. ज्ञानंजय द्विवेदी | आभास की आगमिक अवधारणा | 2005 | 1-4 | 315 |
| 675. | बी.एन. ओझा | "गांधी - एक सम्पूर्ण क्रांति" | 2005 | 1-4 | 323 |
| 676. | डॉ. शिव भानु सिंह | इच्छामृत्यु : एक नैतिक विश्लेषण | 2005 | 1-4 | 337 |
| 677. | मनोज कुमार तिवारी | योगवासिष्ठ में पुरुषार्थ | 2005 | 1-4 | 347 |
| 678. | डॉ. मृत्युंजय कुमार | वनस्पति जगत् | 2005 | 1-4 | 361 |
| 679. | डॉ. आलोक टण्डन | 'हिंद स्वराज' का पुनर्पाठ | 2005 | 1-4 | 367 |
| 680. | डॉ. विजय कान्त दुबे | श्री अरविन्द के विकासवाद में संपोष्यता | 2005 | 1-4 | 377 |
| 681. | डॉ. प्रमोद कुमार सिंह | योगाचार विज्ञानवाद एवं काश्मीर शैव दर्शन | 2005 | 1-4 | 387 |
| 682. | भट्ट प्रियकांत प्रद्युम्न | भारतीय दर्शन में 'अभाव' | 2005 | 1-4 | 395 |